सुगंधा

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



42 वाँ अंक
वर्ष 2023-2024

राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
पंजाब, चण्डीगढ़ – 160017



कुर्सियों पर बाएं से:
सुश्री एकता (हिंदी अधिकारी), सुश्री नाज़ली जे. शाईन (प्रधान महालेखाकार)
सुश्री ललिता शर्मा (उप महालेखाकार)

खड़े हुए बाएं से:
श्री आशीष कुमार जाँगीड़ (कनिष्ठ अनुवादक), श्री महेंद्र सिंह (वरिष्ठ अनुवादक)
सुश्री प्रियंका (कनिष्ठ अनुवादक), श्री गुरदीप कुमार (कनिष्ठ अनुवादक),

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सुगंधा

42 वाँ अंक
वर्ष 2023-2024

राजभाषा कार्यान्वयन समिति
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
पंजाब, चण्डीगढ़ – 160017

प्रकाशन विवरण

मुख्य संरक्षक	:	**सुश्री नाज़ली जे. शाईन** प्रधान महालेखाकार
संरक्षक	:	**सुश्री रनदीप कौर औजला** वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)
संपादक	:	**सुश्री एकता** हिन्दी अधिकारी
संपादन सहयोग	:	**श्री महेंद्र सिंह** वरिष्ठ अनुवादक **श्री गुरदीप कुमार** कनिष्ठ अनुवादक **सुश्री प्रियंका** कनिष्ठ अनुवादक **श्री आशीष कुमार जाँगीड़** कनिष्ठ अनुवादक
मुख पृष्ठ	:	**महाराजा रणजीत सिंह स्मारक, अमृतसर** (सौजन्य – इंटरनेट)
अंतिम पृष्ठ	:	**सुखना झील, चण्डीगढ़** (सौजन्य – गौरव बग्गा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी)
अंक	:	**42वाँ अंक**
प्रकाशक	:	**राजभाषा कार्यान्वयन समिति,** कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) पंजाब, चण्डीगढ़ – 160017
मूल्य	:	**राजभाषा के प्रति निष्ठा।**
मुद्रक	:	**कैपिटल ग्राफिक्स** एस.सी.ओ. 133–135, सैक्टर 17–सी, चण्डीगढ़।

नोटः रचनाकारों के विचारों से सम्पादक मण्डल की सहमति आवश्यक नहीं है। रचनाओं की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी होंगे।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

अनुक्रमणिका

प्रकाशन विवरण		2
अनुक्रमणिका		3
गृह एवं सहकारिता मंत्री का संदेश		4–5
संदेश		6–9
मुख्य संरक्षक का संदेश		10
संरक्षक का संदेश		11
संपादकीय		12
पाठकों के पत्र		13
आलेख		
डाटा संरक्षण से मानव सभ्यता का संरक्षण	रोचक अग्रवाल	15–16
डिजिटल रील्स : खतरे की घंटी	आशीष कुमार	17–18
मुत्यु : एक अटल सत्य	गुरदीप कुमार	19–20
प्रगति के पथ पर भारत	अर्चिता	21–22
मेरा बगीचा	सुदेश कुमार	23
भगवान श्री कृष्ण, मीरा और गुरु रविदास जी	सिकंदर कुमार	24–27
एक यादगार यात्रा	रमेश कुमार शर्मा	28–32
कविता		
ABCD संविधान	नवीन कुमार	39
व्यथा एवम् यात्रा ऑडिट पैरे की	राजीव सूद	40
एहसास	आशीष कुमार जाँगीड़	41
लगता है चुनाव आ रहे हैं	कुलविन्दर सिंह	42
नारी	कविता गुप्ता	43
धरती करे पुकार	तुषार कांती सिन्हा	44
सवेरा आज नहीं तो कल हो जाएगा	धर्म सिंह मीना	45
ताकत–ए–आत्म	मोनिका	46
फिर बारिश	मानसी दुबे	47
माँ, वक्त	पवना देवी	48
कहानी		
पिता	प्रियंका	50–52
कार्यालयीन समाचार		
कार्यालय में आयोजित की गई गतिविधियाँ		53–54
सेवानिवृत्ति		55
उपलब्धियाँ और श्रद्धांजलि		56

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार



प्रिय देशवासियो!

आप सब को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत भाषिक विविधता का देश रहा है। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की भाषिक विविधता को एकता के सूत्र में पिरोने का नाम **'हिंदी'** है। हिंदी भाषा अपनी प्रवृत्ति से ही इतनी जनतांत्रिक रही है कि इसने भारतीय भाषाओं और बोलियों के साथ–साथ कई वैश्विक भाषाओं को यथोचित सम्मान देते हुए उनकी शब्दावलियों, पदों, वाक्य विन्यासों और वैयाकरणिक नियमों को आत्मसात किया है।

हिंदी भाषा ने स्वतंत्रता आन्दोलन के मुश्किल दिनों में देश को एकता के सूत्र में बाँधने का अभूतपूर्व कार्य किया। अनेक भाषाओं और बोलियों में बँटे देश में ऐक्य भावना से पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता की लड़ाई को आगे बढ़ाने में संवाद भाषा हिंदी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। इसीलिए, लोकमान्य तिलक हों, महात्मा गांधी हों, लाला लाजपत राय हों, नेताजी सुभाषचंद्र बोस हों, राजगोपालाचारी हों; हिंदी के शुरुआती पैरवीकारों में बहुसंख्यक उन प्रदेशों के लोग थे, जिनकी मातृभाषाएँ हिंदी नहीं थीं।

किसी भी देश की मौलिक सोच और सृजनात्मक अभिव्यक्ति सही मायनों में सिर्फ उस देश की अपनी भाषा में ही की जा सकती है। प्रसिद्ध साहित्यकार भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने लिखा है कि, **"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति कौ मूल।"** यानि कि, अपनी भाषा की उन्नति ही सभी प्रकार की उन्नति का मूल है। राष्ट्र की पहचान इस बात से भी होती है कि उसने अपनी भाषा को किस सीमा तक मजबूत, व्यापक एवं समृद्ध बनाया है। यही कारण है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी और लिपि के रूप में देवनागरी को अपनाया।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं को राष्ट्रीय से वैश्विक मंचों तक यथोचित सम्मान मिला है। हमारी सभी भारतीय भाषाएँ और बोलियाँ हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं।

अपनी भाषा में सुनी हुई अवांछनीय बातें भी बहुत बुरी नहीं लगती। कवि **विद्यापति** की शब्दावली में कहूँ तो **'देसिल बयना सब जन मिट्ठा'** यानि देशी भाषा सभी जनों को मीठी लगती है। गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयत्नशील है कि शहद सामान मीठी भारतीय भाषाओं को आधुनिक तकनीक के माध्यम से अत्याधुनिक और वैज्ञानिक प्रयोग के अनुकूल उपयोगी बनाया जा सके।

सरकार और जनता के बीच भारतीय भाषाओं में संवाद स्थापित कर जनकल्याणकारी योजनाओं को प्रभावी तौर पर लागू किया जा सकता है। दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र जन–जन तक उनकी ही भाषा में उनके हित की बात पहुँचाकर आदर्श लोकतंत्र के निर्माण का सबसे अच्छा उदाहरण हो सकता है। राजभाषा विभाग ने इसी उद्देश्य से राजभाषा हिंदी के प्रयोग को सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से सहज बनाने की दिशा में काम करते हुए स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली **'कंठस्थ'** का निर्माण और विकास किया है। फिजी में संपन्न 'विश्व हिंदी सम्मेलन' में **'न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन'** के साथ इसके नए वर्जन (कंठस्थ 2.0) के मोबाइल ऐप का भी लोकार्पण भी किया गया है।

राजभाषा विभाग की एक नई पहल **'हिंदी शब्द सिंधु'** शब्दकोश का निर्माण है। इस शब्दकोश में संविधान की 8वीं अनुसूची में अधिसूचित भारतीय भाषाओं के शब्दों को शामिल कर इसे निरंतर समृद्ध किया जा रहा है। साथ ही, विभाग ने **'लीला हिंदी प्रवाह'** मोबाइल ऐप भी तैयार किया है, जिसे अपनाकर विभिन्न भाषा–भाषी 14 भारतीय भाषाओं के माध्यम से अपनी–अपनी मातृभाषाओं से स्तरीय हिंदी निःशुल्क सीख सकते हैं।

भाषा परिवर्तन का सिद्धांत यह कहता है कि भाषा जटिलता से सरलता की ओर जाती है। मेरे विचार से हिंदी के सरल और सुस्पष्ट शब्दों को कार्यालयी कामकाज में प्रयोग में लाना चाहिए। टिप्पणी, पत्राचार, ई–मेल, विज्ञप्ति आदि के लिए आम बोलचाल के शब्दों व वाक्यों के प्रयोग से हिंदी के प्रयोग का चलन बढ़ेगा।

हमारे लिए हिंदी का प्रश्न सिर्फ एक भाषा का प्रश्न नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्वाभिमान व सांस्कृतिक गौरव का विषय है। मुझे विश्वास है कि राजभाषा विभाग के उपरोक्त प्रयासों से सभी मातृभाषाओं को आत्मसात करते हुए लोकसम्मत भाषा हिंदी विज्ञानसम्मत व तकनीकसम्मत होकर संपन्न राजभाषा के रूप में स्थापित होगी।

पुनश्च, आप सब को हिंदी दिवस की अनंत शुभकामनाएं।

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2023

(अमित शाह)

सत्यमेव जयते

संदेश



नवनीत गुप्ता
प्रधान महालेखाकार,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी),
हरियाणा

यह प्रसन्नता का विषय है कि प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा), पंजाब, चंडीगढ़ के कार्यालय के द्वारा हिंदी गृह पत्रिका 'सुगंधा' का 42वाँ अंक प्रकाशित किया जा रहा है। राजभाषा के विकास में यह सराहनीय एवं प्रशंसनीय है।

भारत में विभिन्न भाषाएँ बोली जाती हैं। अनेक भाषाओं की विविधता के साथ सम्पूर्ण भारत को एक सूत्र में पिरोने का कार्य हिंदी भाषा के द्वारा बखूबी किया गया है। हिंदी की भूमिका को हम स्वतंत्रता संग्राम से लेकर आज के आधुनिक एवं प्रौद्योगिक विकास में महसूस कर सकते हैं। आज भारत में ही नहीं बल्कि विश्व पटल पर भी हिंदी अपने अस्तित्व को आकार दे रही है। हिंदी जनमानस की भाषा है और इसका विकास एवं प्रसार करना हमारा मौलिक दायित्व है। कार्मिकों की रचनाओं की गुणवत्ता, प्रासंगिकता तथा विविध विषय इसका परिचायक है कि कार्यालय के कार्मिक इसको सुदृढ़ करने की अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभा रहे हैं।

राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में यह पत्रिका उल्लेखनीय भूमिका निभा रही है। पत्रिका कार्यालय में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों को उनकी रचनात्मक अभिव्यक्ति को प्रकट करने के लिए सुदृढ़ मंच प्रदान करती है।

'सुगंधा' पत्रिका के 42वें अंक के प्रकाशन के लिए सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को मैं अपनी ओर से बधाई एवं शुभकामनाएं संप्रेषित करता हूँ साथ ही मुझे यह उम्मीद है कि यह पत्रिका उत्तरोतर प्रगति करती रहेगी।

नवनीत गुप्ता

सत्यमेव जयते

संदेश



शैलेन्द्र विक्रम सिंह
प्रधान महालेखाकार
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा),
हरियाणा

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) पंजाब, चंडीगढ़ की हिंदी पत्रिका 'सुगंधा' के नवीनतम अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। हमारा देश विविध भाषाओं एवं संस्कृतियों का संगम स्थल है। ऐसी विविधता को एक सूत्र में बांधने के लिए एक संपर्क भाषा का होना आवश्यक था जो संविधान द्वारा राजभाषा हिंदी के रूप में प्राप्त हुई। राजभाषा हिंदी के विकास और प्रचार–प्रसार में हिंदी पत्रिकाओं की एक महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

विभागीय पत्रिकाओं के नियमित प्रकाशन से कार्यालय में कार्यरत कर्मियों को अपने विचार प्रकट करने एवं उनके आदान–प्रदान करने का अवसर प्राप्त होता है जिससे अन्य पाठक भी न केवल लाभान्वित होते हैं बल्कि उनमें हिंदी भाषा के प्रति और अधिक आकर्षण, सहजता एवं संवेदनशीलता का आभास होता है जिससे भाषा के उपयोग को एक नया आयाम एवं दिशा प्राप्त होती है।

आशा करता हूं कि 'सुगंधा' पत्रिका का आने वाला अंक भी ज्ञानवर्धक एवं रुचिकर होगा। पत्रिका परिवार के संपादक एवं प्रबंधक मंडल के प्रयासों की सराहना करते हुए मैं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

शैलेन्द्र विक्रम सिंह

सत्यमेव जयते

संदेश



तेग सिंह
महालेखाकार,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी),
पंजाब एवं यू. टी. चंडीगढ़,

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका ''सुगंधा'' के 42 वें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। इस अवसर पर मैं पत्रिका से जुड़े हुए सभी रचनाकारों, पाठकों और सह संपादक मण्डल को बधाई देता हूँ।

विभागीय पत्रिकाओं ने हिंदी के प्रचार–प्रसार में अहम योगदान दिया है। हिंदी पत्रिकाएं विभाग से जुड़े लोगों को अपने विचार प्रकट करने और हिंदी भाषा को बढ़ावा देने के लिए अवसर प्रदान करती हैं। ये पत्रिकाएं विभिन्न कार्यालयों के मध्य एक सेतु का कार्य करती हैं, जिससे कार्यालयों में होने वाली गतिविधियों की समय–समय पर जानकारी मिलती रहती है। हिंदी न केवल सरकारी काम–काज की भाषा है बल्कि पूरे देश में विचार प्रस्तुत करने का सबसे सशक्त माध्यम है।

''सुगंधा'' पत्रिका के उत्कृष्ट संपादन एवं सफल प्रकाशन हेतु मैं पत्रिका परिवार से जुड़े सभी सदस्यों को पुनः शुभकामनाएं देता हूँ तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

तेग सिंह

सत्यमेव जयते

संदेश

के.एस. रामुवालिया
प्रधान निदेशक,
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय),
चण्डीगढ़

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका ''सुगंधा '' के 42 वें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है इसकी मुझे हार्दिक प्रसन्नता है। इसके लिए पत्रिका परिवार के सभी सदस्य एवं रचनाकार बधाई के पात्र हैं। यह पत्रिका हमें आपके कार्यालय की सांस्कृतिक गतिविधियों एवं विभागीय क्रियाकलापों से अवगत करवाती रहेगी। साथ ही हिंदी के प्रचार–प्रसार में अपनी विशिष्टता को बनाए रखेगी ऐसा मेरा विश्वास है।

राजभाषा हिंदी जनमानस की अभिव्यक्ति का माध्यम है और इसमें अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के शब्दों को अपने में सम्मिलित करने का भी गौरव है। पत्रिका का प्रकाशन राजभाषा के प्रति सम्मान का प्रतीक है। इसलिए मुझे विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक राजभाषा की प्रगति की दिशा में प्रेरक बनेगा।

शुभकामनाओं सहित।

के.एस. रामुवालिया

सत्यमेव जयते

मुख्य संरक्षक का संदेश



नाज़ली जे. शाईन
प्रधान महालेखाकार
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
पंजाब, चंडीगढ़

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि कार्यालय की पत्रिका 'सुगंधा' का 42 वां अंक प्रकाशित किया जा रहा है। हिंदी भाषा को प्रचारित–प्रसारित करने की दिशा में गृह पत्रिका का प्रकाशन एक सकारात्मक प्रयास है। इस पत्रिका हेतु अपनी रचनाएं देने वाले रचनाकार अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति प्रस्तुत करने के लिए विशेष प्रशंसा के पात्र हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका को स्वतंत्र विचार प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान करेगी, जो कि हिंदी के उन्नयन के लिए एक सराहनीय प्रयास है।

पत्रिका का सफल प्रकाशन राजभाषा के प्रति कर्मचारियों/अधिकारियों की निष्ठा और प्रेम का द्योतक है। 'सुगंधा' पत्रिका कार्मिकों को हिंदी में कार्य करने के लिए इसी प्रकार प्रोत्साहित करती रहेगी। मेरी ओर से सभी रचनाकारों और सम्पादन मंडल को पत्रिका के प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

नाज़ली जे. शाईन

सत्यमेव जयते

संरक्षक का संदेश



रनदीप कौर औजला
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
पंजाब, चंडीगढ़

मुझे यह जानकार अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'सुगंधा' का 42 वां अंक प्रकाशित हो रहा है। इस अवसर पर मैं पत्रिका परिवार को हार्दिक बधाई देती हूँ।

विभागीय पत्रिकाएं कार्यालय में होने वाली गतिविधियों से दूसरे कार्यालयों को अवगत करवाती हैं। 'सुगंधा' पत्रिका ने राजभाषा के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है और आगे भी देती रहेगी। 'सुगंधा' पत्रिका के माध्यम से रचनाकारों को अपनी भावनाओं और विचारों को अभिव्यक्त करने का सार्थक मंच प्रदान हुआ है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु सभी रचनाकार, संपादन मंडल एवं प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े सभी कार्मिक बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

रनदीप

रनदीप कौर औजला

सत्यमेव जयते

संपादकीय



कार्यालयीन पत्रिका 'सुगंधा' के 42 वें अंक के प्रकाशन के अवसर पर आपका हृदय से स्वागत है। भारत सरकार की सम्पूर्ण गतिविधियों को ई–पत्रिका के माध्यम से आपके समक्ष प्रस्तुत करने का हमारा यह प्रयास निरंतर जारी है। विभागीय पत्रिका का प्रकाशन केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के अनुपालन का एक महत्वपूर्ण अंग रहा है। आज राजभाषा हिंदी 40 प्रतिशत से भी अधिक भारतीयों द्वारा बोली जाने वाली भाषा है और सही अर्थों में जनभाषा कहलाने की अधिकारिणी है।

राजभाषा हिंदी राष्ट्र की अन्य भाषाओं से एक अनुभवपूर्ण तारतम्य स्थापित करती है। इसलिए यह जनमानस की भाषा के रूप में सामने आती है और प्रशासन की भाषा भी बन गई। पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन वर्षों से आपसी संपर्क का माध्यम रहा है। पत्रिकाएँ हमें भाषा के विविध रूपों, प्रयोगों को प्रस्तुत करती हैं, जिसमें हम जीवन के सभी आयामों को पढ़ते हैं।

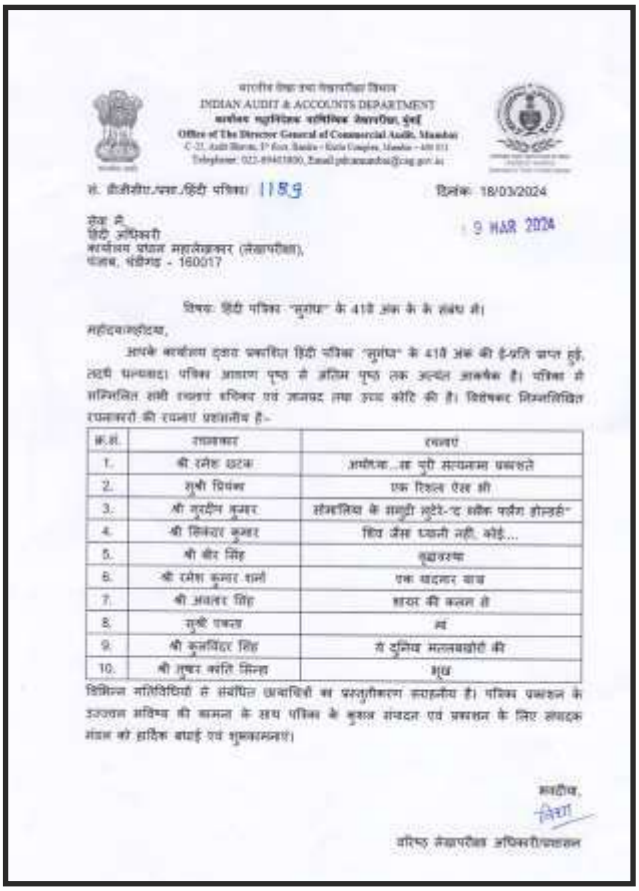
कार्यालय में कार्यरत प्रत्येक व्यक्ति राजभाषा के प्रचार–प्रसार में अग्रणी योगदान के लिए उत्साहित एवं प्रेरित है। इसी उत्साह और प्रेरणा को मूर्त रूप देने के उद्देश्य से कार्यालय की गृह पत्रिका 'सुगंधा' का नवीन अंक सेवा में प्रस्तुत है। जीवन के विभिन्न पहलुओं को छूने वाले अनुभवों की खट्टी–मीठी अभिव्यक्ति इसमें समाहित है।

इस पत्रिका के प्रकाशन के योगदान देने के लिए आप सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई। मैं आशा करती हूँ कि आपको यह अंक पसंद आएगा एवं भविष्य के प्रकाशनों के लिए आपका सुझाव आमंत्रित है।

शुभकामनाओं सहित

एकता
हिंदी अधिकारी

पाठकों के पत्र



भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई
Office of The Director General of Commercial Audit, Mumbai

सं. डीजीसीए./पत्र./हिंदी पत्रिका/ 1159 दिनांक: 18/03/2024

सेवा में
हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
पंजाब, चंडीगढ़ - 160017

9 MAR 2024

विषय: हिंदी पत्रिका "सुगंधा" के 41वें अंक के के संबंध में।

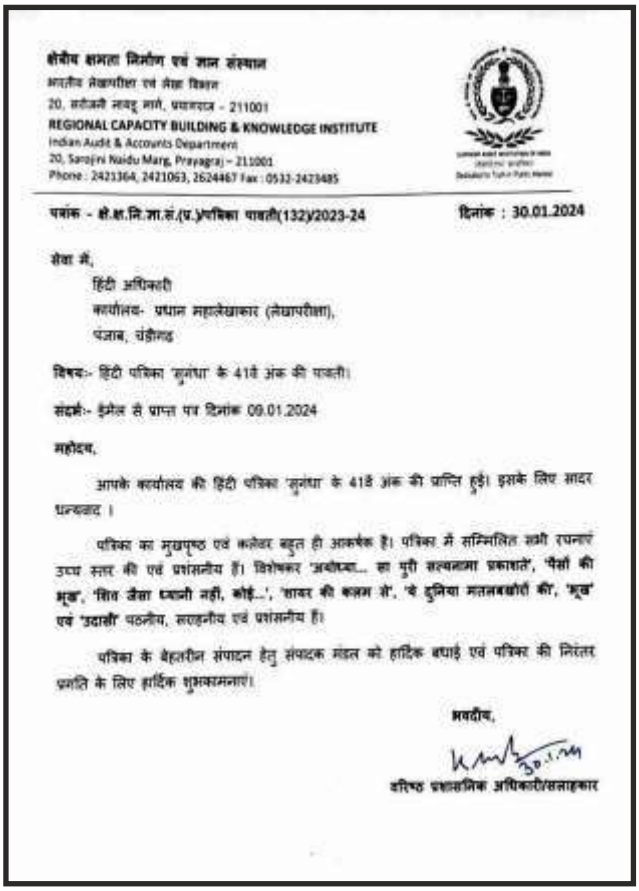
महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "सुगंधा" के 41वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका आद्यांत पृष्ठ से अंतिम पृष्ठ तक अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं रुचिकर एवं जानकर तथा उच्च कोटि की है। विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएं प्रशंसनीय है:-

क्र.सं.	रचनाकार	रचनाएं
1.	श्री रमेश ठठक	अर्थोदय...वह पूरी सत्यकथा प्रकाशते
2.	सुश्री प्रियंका	एक रिश्ता ऐसा भी
3.	श्री गुरदीप कुमार	लोमानिया के समुद्री लुटेरे-द ब्लैक पर्ल्स ऑफ्लैंडर्स"
4.	श्री सिकंदर कुमार	शिव जैसा ध्यानी नहीं, कोई...
5.	श्री वीर सिंह	मुक्तछन्द
6.	श्री रमेश कुमार शर्मा	एक यादगार याद
7.	श्री अवतार सिंह	शहर की कलम से
8.	सुश्री एकता	मां
9.	श्री कुलविंदर सिंह	ये दुनिया मतलबखोरी की
10.	श्री तुषार कांति मिश्रा	भूख

विभिन्न गतिविधियों से संबंधित छायाचित्रों का प्रस्तुतीकरण सराहनीय है। पत्रिका प्रकाशन के उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ पत्रिका के कुशल संपादन एवं प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

भवदीय,
(विभा)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/सहायक



केंद्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान
भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
20, सरोजनी नायडू मार्ग, प्रयागराज - 211001
REGIONAL CAPACITY BUILDING & KNOWLEDGE INSTITUTE
Indian Audit & Accounts Department
20, Sarojini Naidu Marg, Prayagraj – 211001
Phone : 2421364, 2421063, 2624467 Fax : 0532-2423485

पत्रांक - क्षे.क्ष.नि.ज्ञा.सं.(प्र.)/पत्रिका पावती(132)/2023-24 दिनांक : 30.01.2024

सेवा में,
हिंदी अधिकारी
कार्यालय- प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
पंजाब, चंडीगढ़

विषय:- हिंदी पत्रिका 'सुगंधा' के 41वें अंक की पावती।

संदर्भ:- ईमेल से प्राप्त पत्र दिनांक 09.01.2024

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'सुगंधा' के 41वें अंक की प्राप्ति हुई। इसके लिए सादर धन्यवाद।

पत्रिका का मुखपृष्ठ एवं कलेवर बहुत ही आकर्षक है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं उच्च स्तर की एवं प्रशंसनीय हैं। विशेषकर 'अर्थोदय... वह पूरी सत्यकथा प्रकाशते', 'पैसों की भूख', 'शिव जैसा ध्यानी नहीं, कोई...', 'शहर की कलम से', 'ये दुनिया मतलबखोरी की', 'भूख' एवं 'उदासी' पठनीय, सराहनीय एवं प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका के बेहतरीन संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी/सहायक



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) हरियाणा
लेखा भवन, प्लॉट संख्या 4-5, सेक्टर-33-बी, चंडीगढ़-160020
टेलीफोन नंबर 2614031, 2613211, 2615362
OFFICE OF THE PR. ACCOUNTANT GENERAL (A&E) HARYANA
LEKHA BHAWAN, PLOT NUMBER 4-5, SECTOR-33-B,
CHANDIGARH-160020
EMAIL: agaehr1440@cag.gov.in
FAX: 0172603824

हिंदी कक्ष/पत्रि.प्रति./2023-24/275
दिनांक: 26.02.2024

सेवा में,

हिंदी अधिकारी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) पंजाब,
चंडीगढ़ ।

महोदय/महोदया,

विषय: त्रिमासिक पत्रिका 'सुगंधा' के 41वें अंक के प्रेषण के संबंध में ।

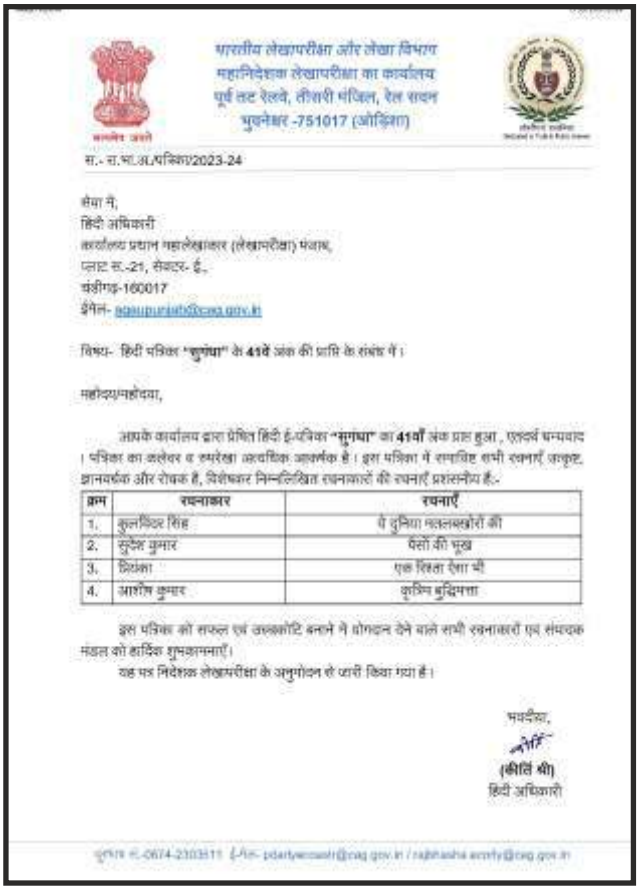
आपके कार्यालय के पत्र दिनांक 08.01.2024 के द्वारा आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'सुगंधा' के 41वें अंक की ई-प्रति संप्राप्त प्राप्त हुई । पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं । पत्रिका में समाविष्ट श्री गुरदीप सिंह का लेख 'लोमानिया के समुद्री लुटेरे - द ब्लैक पर्ल्स ऑफ द सीज' बहुत ही ज्ञानवर्धक लेख है ।

श्री कुलविंदर सिंह की कविता 'ये दुनिया मतलब खोरी की' एवं सुश्री अंजू बाला की कविता 'जिंदगी' पठनीय है ।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक-मंडल बधाई के पात्र हैं । पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ ।

भवदीय
(डॉ. सुधा तिवारी)
हिंदी अधिकारी

Scanned with ACE Scanner



भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, तीसरी मंजिल, रेल सदन
भुवनेश्वर -751017 (ओड़िशा)

सं.- स.म.अ./पत्रिका/2023-24

सेवा में,
हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) पंजाब,
प्लाट सं.-21, सेक्टर- ई,
चंडीगढ़-160017
ईमेल- agaupurai@cag.gov.in

विषय- हिंदी पत्रिका "सुगंधा" के 41वें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी ई-पत्रिका "सुगंधा" का 41वाँ अंक प्राप्त हुआ, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रूपरेखा आकर्षक आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक है, विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएँ प्रशंसनीय है:-

क्रम	रचनाकार	रचनाएँ
1.	कुलविंदर सिंह	ये दुनिया मतलबखोरी की
2.	सुदेश कुमार	पैसों की भूख
3.	प्रियंका	एक रिश्ता ऐसा भी
4.	आशीष कुमार	कृत्रिम बुद्धिमत्ता

इस पत्रिका को सफल एवं उत्कृष्ट बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

यह पत्र निदेशक लेखापरीक्षा के अनुमोदन से जारी किया गया है।

भवदीया,
(कीर्ति श्री)
हिंदी अधिकारी

दूरभाष सं.-0674-2303511 ई-मेल- pdarlyaecoatr@cag.gov.in / rajbhasha.ecorlty@cag.gov.in

आलेख

डाटा संरक्षण से मानव सभ्यता का संरक्षण



रोचक अग्रवाल
आशुलिपिक

आज सदियों के विकास के पश्चात, मनुष्य 21 वीं शताब्दी में है जहाँ तकनीकी विकास ने न केवल मनुष्य को अन्तरिक्ष में स्थापित किया अपितु चंद्रमा पर जाकर शोध करने का भी अवसर प्रदान किया। इस तकनीक के माध्यम से ही हम संगणक (कंप्यूटर), कैमरा व इन्टरनेट जैसी डिजिटल तकनीक को विकसित करने में सफल हुए है, जो डिजिटल भंडारण (digital storage) की सहायता से बड़ी मात्रा में डाटा का लम्बे समय तक (जब तक आवश्यक हो) भंडारण (सॉफ्ट प्रतियों के रूप में) एवं संरक्षण करने में सक्षम है। इस डाटा में सूचना लिखित, चित्रित एवं चलचित्रित किसी भी रूप में हो सकती है जबकि ज्ञान एवं सूचना को संरक्षित एवं प्रसारित करने की पारंपरिक विधि लिखित लेख एवं पुस्तकों का लेख व वाचन है। परन्तु इस विधि की कुछ सीमाएं है जैसेः लिखित लेख एवं पुस्तकों के माध्यम से डाटा को चलचित्र प्रारूप में संरक्षित नहीं किया जा सकता अन्यथा हमें उस दौर की झलक (glimpse) विडियोलॉग (video log) के माध्यम से मिल सकती थी जो कि आने वाले युग के लिए आज संभव है। अधिक मात्रा में पुस्तकों व लेखों का भंडारण करना बहुत कठिन कार्य है जिसमें श्रम व मुद्रा का व्यय अधिक होता है तथा पुस्तकालयों व किताबघरों की देखभाल की भी आवश्कता होती है परन्तु इन्टरनेट एवं डिजिटल भंडारण के द्वारा यह समस्या उत्पन्न नहीं होती। भारी मात्रा में पुस्तकों की आपूर्ति करने के लिए अधिक पेड़ काटने की आवश्कता पड़ेगी जो कि पर्यावरण के लिए हानिकारक है। इस समस्या का समाधान भी तकनिकी उन्नति ही है। पुस्तकालयों व किताबघरों में किसी विशेष किताब को ढूंढना कई बार कठिन कार्य हो जाता है जबकि इन्टरनेट एवं डिजिटल स्टोरेज क माध्यम से यह कार्य सरलता से हो सकता है।

इसके अलावा सालों–साल तक लिखित लिपियों की सही अवस्था बनाये रखना भी जटिल कार्य है। समय (शताब्दियां) के बीतने के साथ–साथ इन लिखित ग्रंथों एवं पुस्तकों के नष्ट होने का खतरा भी अधिक होता है जबकि सॉफ्ट प्रतियां समयांतराल में भी वैसी ही रहती है एवं मौलिक रूप से भी नष्ट नहीं हो सकती। उदाहरणार्थ कुछ नष्ट हो चुके प्राचीन ग्रंथ जैसेः "जय एवं भारत" (ग्रन्थ महाभारत का प्राचीन स्वरुप), "चार्वाक दर्शन शास्त्र" के "ब्रहस्पत्य सूत्र", "वल्यापाथी" एवं "कुंडलाकेशी" (तमिल महाकाव्य), महर्षि सुश्रुत द्वारा रचित प्राचीन चिकित्सा ग्रन्थ "सुश्रुत संहिता" का कुछ भाग आदि है। इसके अतिरिक्त "नालंदा विश्वविद्यालय" के पुस्तकालय को विदेशी आक्रान्ता बख्तियार खिलजी ने जला दिया था जिसमें अनेकों संस्कृत, बौद्ध धर्म की पुस्तकों आदि का संकलन था एवं उस काल में प्रत्येक पुस्तक की प्रतियां हस्तलिखित होती थी जिनकी संख्या प्रिंटिंग प्रेस के अभाव में आज की तुलना में बहुत कम होती थी, यही कारण है कि इस घटना को भारत में बौद्ध धर्म के पतन का कारण माना जाता है। इन ग्रंथों के नष्ट हो जाने से पता नहीं कितनी महत्वपूर्ण सूचनाएं एवं शोधों के परिणाम नष्ट हो गए। कितने लेखकों के लेख नष्ट हो गए इतना ही नहीं हम अभी तक प्राचीन सिन्धु घाटी सभ्यता की लिपि (ब्रोस्टोफीडन) को जानने व समझने में असमर्थ है जोकि पुरातत्व खुदाई के दौरान प्राप्त हुई मोहरों एवं रोजेटा स्टोन (Rosseta Stone) (शिलालेख) पर अंकित है। यदि हम इस भाषा को समझने में सक्षम हो पाते तो हम प्राचीन सिन्धु घाटी सभ्यता की संस्कृति, जनजीवन एवं अन्य तथ्यों को भी जान पाते, हमारे इतिहास को गहराई से जान पाते एवं हमारे आज के दौर की नींव एवं उत्पत्ति को समझ पाते। यह सब डाटा संरक्षण के माध्यम से संभव था। पुरातत्व की खुदाई से प्राप्त अवशेषों एवं विशेषज्ञों के शोध से यह पता

चला है कि उस समय के लोगों को (आज से लगभग 3000 वर्ष पूर्व) ज्यामिति, गणित, रसायन एवं तकनीक का ज्ञान था तत्पश्चात उस सम्पूर्ण सभ्यता का विनाश हो गया और मानव ने (भारतीय भूभाग के संदर्भ में) दोबारा शून्य से प्रारंभ किया। इसके अतिरिक्त डाटा संरक्षण की तकनीक न होने के कारण भारतीय वैज्ञानिकों, खगोलशास्त्रियों एवं गणितज्ञों द्वारा पूर्व में किये गए खोज, शोध एवं निष्कर्षों की पुनः खोज अन्य पश्चिमी शोधकर्ताओं द्वारा की गई उदाहरणार्थः– जॉन डाल्टन (John Dalton) ने "आण्विक सिद्धांत" (Atomic Theory), 18 वीं शताब्दी में दिया जबकि आचार्य कणाद ने 600 ई.पू. में ही "अणु" (Atom) के विषय में बता दिया था। चतुर्थ शताब्दी में भारतीय खगोलशास्त्री भास्कराचार्य ने अपनी पुस्तक "सूर्य सिद्धांत" में "गुरुत्वाकर्षण" (Gravity) को परिभाषित कर दिया था जबकि न्यूटन (Newton) ने इसके 1200 वर्ष बाद 17 वीं शताब्दी में "गुरुत्वाकर्षण का नियम" (Law of Gravity) दिया था । आचार्य आर्यभट्ट ने पृथ्वी का वृत्ताकार होने एवं अपने अक्ष पर सूर्य के चारों और घूमने जैसे सिद्धांतों को अपनी पुस्तक "आर्यभट्टीय" में 476 ई. में वर्णित कर दिया था जबकि कॉपरनिकस ने अपना "हीलियोसेंट्रिक सिद्धांत" (Heliocentric Theory) 15 वीं शताब्दी में दिया था। बोधायन जोकि भारत के एक प्राचीन गणितज्ञ थे, अपनी पुस्तक "शुल्व सूत्र" में पाई (π) एवं पाईथागोरस प्रमेय (Pythagoras theorem) का उल्लेख किया था जो कि स्वयं पाईथागोरस (Pythagoras) से सदियों पहले का था। "केरल गणित व खगोलशास्त्र विद्यालय" के संस्थापक आचार्य माधव ने 14 वीं शताब्दी में कैल्कुलेस , अनंत श्रेणी एवं त्रिकोणमिती के क्षेत्र में अनेकों सूत्र अपनी पुस्तकों "तंत्रसंग्रह एवं युक्तिभाषा" में दिए जिनका श्रेय 1671 ई. में "ग्रेगरी लिब्नित्ज श्रेणी" नाम से दो गणितज्ञों ने ले लिया ।

एक सूत्र तंत्रसंग्रह से ("π" के मान के लिए) :– (श्लोक के रूप में)

व्यासे वारिधिनिहते (4) रुपहते (1) व्याससागरभिहते ।

त्रिसारादि (3,5) विषम संख्या भक्ते (वकक, भाग) ऋणमस्वं (–) प्रथम क्रमात् कुर्यात ॥

गणितीय सूत्र के रूप :–

$$\frac{\pi}{4} = 1 - \frac{1}{3} + \frac{1}{5} - \frac{1}{7} + \frac{1}{9} - \ldots\ldots\ldots$$

तत्पश्चात 21 वीं शताब्दी में इसे "मेनचेस्टर विश्वविद्यालय" (University of Manchester) द्वारा स्वीकार किया गया ।

अतः इन सभी बिन्दुओं से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि यदि तकनीक होती एवं तकनीक के माध्यम से डाटा को संरक्षित किया जा सकता तो हमें एक ही खोज या शोध को पुनः करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। इस प्रकार से देखा जाए तो मानव सभ्यता का विकास गतिशीलता से ही संभव है एवं यह विचार किया जा सकता है कि आज मानव सभ्यता कितनी विकसित होती यदि सिन्धु घाटी सभ्यता का डाटा हमारे 2000 वर्ष पूर्व के पूर्वजों के पास होता तो अभी तक विकास के सन्दर्भ में मानव चाँद पर न केवल कदम रखता अपितु रेंज रोवर भी चला रहा होता।

"हिन्दी भारतीय संस्कृति की आत्मा है

– कमलापति त्रिपाठी

"डिजिटल रील्स : खतरे की घंटी"



आशीष कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

आधुनिक सोशल मीडिया की क्रांतिकारी दुनिया में रील्स अत्यधिक लोकप्रिय होती जा रही है। देखते जाओ, देखते जाओ अच्छा लगता जाता है, हमें कहाँ रुकना है यहाँ पता ही नहीं चल पाता है। 30–30 सेकण्डस के छोटे–छोटे रील्स का अल्गोरिदम इतनी खूबसूरती से बना होता है कि स्वनियंत्रित करना मुश्किल हो जाता है और यह लत हमारी आदत में आसानी से शामिल हो जाती है। मनपसंद रील्स देखने की शुरुआत, बोर होने से बचने के लिये, रोजमर्रा के तनाव को दूर करने के लिए, तत्काल जानकारी प्राप्त करने के लिए आदि से होती है और बाद में मस्तिष्क की भूख हमें इसका आदी बना देती है। मनोरंजन की चाहत में रील्स की कृत्रिम दुनिया हमें लगातार वास्तविक संबंधों से दूर करती जा रही है। परिवार के साथ बिताये जाने वाले समय में हम रील्स की दुनिया में खोते जा रहे हैं।

आत्मनियंत्रण से बाहर होती जा रही रील्स की लत हमें बैचेनी, तनाव, नींद की कमी, आँखों की बीमारी एवं नई–नई समस्याओं के गहरे भँवर में डालती जा रही है। स्क्रोल करते ही दूसरी रील इतनी जल्दी आती है कि हमारा दिमाग प्रोसेसिंग भी नहीं कर पाता है। ये स्कूल, कार्यालय आदि के कामों में भी अरुचि पैदा करती है।

क्या बूढ़े, क्या जवान, छोटे–छोटे बच्चों में भी इसकी लत महामारी का रूप लेती जा रही है। कई तरह की Varieties, स्वतंत्र प्रवाह (free flowing), लगातार व्यस्त बनाये रखना आदि गुणों के कारण बच्चों में मानसिक विकास की कमी, आँखों एवं शरीर पर प्रभावी दुष्परिणाम आदि देखने को मिल रहे हैं। कुछ सामग्री तो बच्चों के देखने के लायक भी नहीं होती हैं लेकिन देखने की जिज्ञासा उन्हें उम्र से पहले कई प्रकार की अवांछित सूचनाएँ उपलब्ध करा देती है। रील्स की बढ़ती लत उन्हें घर से बाहर जाकर प्राकृतिक वातावरण में खेलना– कूदना, एक्सट्राकरिकुलर एक्टिविटीज़ में दिमाग लगाने के बजाय शारीरिक एवं मानसिक रूप से कमजोर तथा परनिर्भर (dependent) बनाती जा रही है। कभी–कभी तो खुद रील्स बनाना, सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर डालना, लाईक्स, व्यूज और सब्सक्राइबर्स मिलने से तत्काल लोकप्रिय हो जाने की चाहत सुपर एंग्जायटी पैदा करती है। संभावित घटनाओं एवं प्रक्रियाओं में कई बच्चों एवं युवाओं की असमय काल–कवलित होने की खबरें प्रायः मीडिया में आती रहती है। रील्स बनाना कतई आसान नहीं होता है इसके लिये स्किल्ड प्रोफेशनल्स भी काफी सावधानी के साथ खतरों की संभावना से आत्म–रक्षण के उपाय साथ इसे बनाते हैं।

रील्स से लगातार बहती हुई सूचना तथा ज्ञान का अथाह भंडार जोकि कई मोटिवेशनल प्रोफेशनल्स (पेशेवर प्रेरकों) द्वारा हमारी पसंद के अनुसार बिना ब्रेक के प्रसारित होता है, हमें अपने ऊपर इसे लागू करने का भी समय नहीं देता हैं। यह ओवर इनफार्मेशन हमारा कीमती समय कब और कितना ज्यादा चुरा ले जाती है, हमें होश तक नहीं रहता है क्योंकि कभी–कभी अच्छे कंटेट भी होते हैं जिनको हम रोजमर्रा के जीवन में खुद पर अमल करने से स्वयं को स्वस्थ, अनुशासित, संयमित रख कर कुशल व्यक्तित्व के स्वामी बन सकते है।

दुर्भाग्यवश इनकी अनियंत्रित लत हमें मौका ही नहीं दे पाती है। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने भी "परीक्षा पर चर्चा" के दौरान बच्चों से कहा था कि अगर आप बहुत ज्यादा इसे पसंद करते हैं तो इस पर नियंत्रण भी रखियेगा क्योंकि इसके बहुत दुष्परिणाम भी होते हैं।

रील्स की अनियंत्रित आदत एवं लोकप्रियता के बीच एक संतुलन बनाना अति आवश्यक है। इसे महामारी बनने से रोकने के लिये अनुशासित रूप से कई महत्वपूर्ण कदम उठाने होंगे, जिसमें नियमित रूप से No phone time, social media notifications पर विराम लगाना जैसे कई कदम होने चाहिए।

मीटिंग्स के दौरान, वाहन चलाते समय, सोते समय बेड पर फोन, टेबलेट को दूरी पर रखना। एप्स के समय–नियत फीचर (time-Limit feature) को सेट करना, भ्रामक एवं उत्तेजक सामग्री को बार–बार नहीं देखना, कार्य–स्थल पर रील्स देखने से दूरी बनाये रखना, बच्चों को भी मॉनिटर करना कि वे मोबाइल्स पर प्रायः किस प्रकार की सूचनाएँ देखते हैं। फोन पर उनकी निर्भरता कम–से–कम करना तथा स्वयं को भी उनके सामने लंबे समय तक फोन पर व्यस्त रहने से बचाना होगा। यह एक खतरे की घंटी के समान है अन्यथा हम देश के भविष्य, हमारे नौनिहालों को खतरों से भरी अंधकारमय दुनिया की ओर जाने से नहीं रोक पायेंगें। संतुलन बहुत जरुरी है, जरुरत से ज्यादा कोई भी चीज हो अच्छी हो या बुरी, नुकसान करना शुरु कर देती है। यह भी समय का एक दौर है जो कुछ समय के पश्चात बदल जायेगा।



मृत्यु : एक अटल सत्य



गुरदीप कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

मृत्यु इस भौतिक संसार का सबसे बड़ा सत्य है। यदि कहीं जन्म है तो मृत्यु भी है। स्वयं भगवान ने अनेक बार अलग–अलग रूप में इस धरती पर जन्म लिया, और अपने सभी कार्य पूर्ण करने के पश्चात वो भी मृत्यु को प्राप्त हुए। हर बार उन्होंने इस संसार को यही दिखाया कि जो जन्मा है उसकी मृत्यु भी निश्चित है। यही शाश्वत सत्य है। जन्म के बाद इस भौतिक संसार की चकाचौंध में अपने विभिन्न क्रियाकलाप करते हुए कभी मनुष्य का ध्यान इस विषय पर नहीं जाता जबकि वह देखता भी है कि उसके चारों तरफ मौजूद सभी प्राणी अपने समयानुसार मृत्यु को प्राप्त हो रहे हैं। इतना सब घटित होते देख भी मनुष्य इस सच के बारे में ना सोचना चाहता है, और ना ही इस विषय में चर्चा करना चाहता है। क्योंकि वह इस भ्रम में है कि उसका नंबर कभी नहीं आयेगा। यह ठीक उसी तरह है जैसे एक कबूतर आँखें बंद करके यह सोचता है कि बिल्ली भी उसे नहीं देख पायेगी परन्तु एक दिन ऐसा आता है जब बिल्ली रूपी मृत्यु उसे अपने जबड़े में जकड़कर उसके प्राण हर लेती है।

कई मनुष्यों को मृत्यु का भय बराबर लगा रहता है। आखिर हो भी क्यों नहीं? मृत्यु तो हमेशा दबे पाँव आती है और जीवन को अपने पंजों में जकड़ ले जाती है। उस पर किसी का जोर क्या चलेगा ? इसलिए कुछ लोग मृत्यु को बड़ा ही क्रूर कहते हैं ।

मृत्यु के सन्दर्भ में मुझे अपने एक बहुत ही निकट सम्बन्धी का स्मरण होता है, जिनकी मृत्यु ने मेरी सोच को पाताल रूपी गहराई तक सोचने को विवश किया। उनमें जीवन जीने का इतना गजब का उत्साह था कि उन्हें लगता था कि उन्हें कभी कुछ नहीं होगा। उनकी सोच अपने भौतिक शरीर को लेकर ऐसी थी कि उन्होंने सेवानिवृति के पश्चात् मिलने वाली मेडिकल सुविधा के लिए भी कभी आवेदन तक नहीं किया। स्वयं को दिन भर घर व खेतों के कार्यों में इतना व्यस्त रखते थे कि कभी किसी बीमारी ने उन्हें छुआ तक नहीं। लेकिन एक दिन हृदयाघात रूपी मृत्यु ने ऐसी दस्तक दी कि सोचने का भी समय नहीं मिला और मृत्यु ने जीवन पर अपनी श्रेष्ठता साबित कर दी। मृत्यु ने यह सिद्ध कर दिया कि वही सर्वशक्तिमान है और शाश्वत सत्य भी।

महर्षि वाल्मीकि ने कहा है– "मृत्यु जीवन के साथ ही चलती है, वह जीवन के साथ ही बैठी हुई है और सुदूरवर्ती पथ पर भी जीवन के साथ–साथ जाकर साथ ही लौट आती है।" व्यक्ति जीवन पर्यन्त इस संसार के प्रपंचों में पड़ा कर्मरत रहता है। वह प्रत्यक्षतः तो जीवन जीता प्रतीत होता है, पर परोक्ष रूप से मृत्यु हर क्षण छाया की तरह उसके साथ–साथ चलती है। इस प्रकार मृत्यु जीवन की सहचारी है। वह जीवन के साथ आती है और जीवन को साथ लेकर ही जाती है। भगवान् बुद्ध जीवन–मरण को दुःख मानते हैं। दार्शनिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से वह इस दुःख से निवृति का मार्ग सुझाते हैं। सम्पूर्ण भारतीय शास्त्र एवं पुराण तो मृत्यु के बाद भी आत्मा की अमरता की बात करते हैं।

श्रीमद्भागवद्गीता मृत्यु को एक विश्राम स्थल मानती है। वहीं अथर्ववेद कहता है।

" तमेव विद्वान् न विभाय मृत्यो : "

अर्थात् आत्मा को जानने पर मनुष्य मृत्यु से नहीं डरता ।

आत्मा की अमरता में विश्वास करने वाला भारतीय मनुष्य मृत्यु में सामान्यतः भौतिक शरीर के नाश की बात करता है। वही इस संसार में मृत्यु के बाद भी मनुष्य का यश उसके द्वारा किये गया परहित कर्मों के द्वारा जीवित रहता है।

कुरुक्षेत्र की युद्धभूमि में अर्जुन ने जब अपने चारों तरफ खड़े परिजनों एवं प्रियजनों को देखा तो उसका मन उनकी मृत्यु के भय से करुणा से भर गया। उसने श्रीकृष्ण के समक्ष युद्ध न करने की इच्छा व्यक्त करते हुए अपने धनुष बाण को रथ पर पटक दिया। उसे ज्ञान था कि उसके बाणों की वृष्टि से उसके परिजन अवश्य ही

मृत्यु को प्राप्त हो जायेंगे। तब श्रीकृष्ण जी ने गीता का उपदेश देते हुए उसे मृत्यु के बाद पुनर्जन्म के बारे में बताते हुए कहा था–

जातस्य हि धुर्वो मृत्युधुर्वं जन्म मृत्यस्य च ।
तस्माद परिहार्येर्थे न त्वम् शोचितुमहर्सी ।।

इसका अर्थ है कि जिसने जन्म लिया उसकी मृत्यु निश्चित है और मृत्यु के बाद पुनर्जन्म भी निश्चित है, इसलिए अपने अपरिहार्य कर्तव्य पालन में तुम्हे शोक नहीं करना चाहिए। गीता के अनुसार आत्मा न तो कभी जन्म लेती है और न ही मरती है। मृत्यु तो केवल शरीर की ही होती है।

सांसारिक मनुष्य के लिए मृत्यु एक ऐसा विषय है जिसकी चर्चा को उसने किसी आयाम तक नहीं पहुँचाया यानि आमतौर पर इस विषय के बारे में बातचीत को बहुआयामी नहीं बनाया। जीवन जीने की चाह एवं मौत के भय ने इस विषय को धूमिल कर दिया है। लेकिन कुछ भी हो समय आने पर मृत्यु जीवन पर हावी हो ही जाती है। स्वयं भगवान् ने भी अनेकों बार इस पृथ्वी पर मनुष्य रूप में अवतार लेकर अंत में मृत्यु को प्राप्त कर यह दर्शाया है कि जो जन्मा है उसकी मृत्यु निश्चित है और प्रत्येक प्राणी को यह कभी भी भूलना नहीं चाहिए।

इस विषय पर मेरे पिताजी हमेशा एक बात के द्वारा जीवन एवं मृत्यु की महता समझाते हैं। हिन्दू धर्म में अभिवादन या प्रणाम करने के लिए राम– राम शब्द का प्रयोग किया जाता है। इसके पीछे का अर्थ उन्होंने हिन्दू संस्कृति में निहित आध्यात्मिकता के भाव द्वारा समझाया। पहले राम शब्द का अर्थ सीधे–सीधे भगवान राम से संबंधित है। राम जीवन दाता है और जीवन में खुशहाली एवम् उन्नति के लिए उनका आशीर्वाद अत्यावश्यक है। राम शब्द का अर्थ ही जीवन (दाता) है। दूसरे राम को जब हम विपरीत क्रम में लिखते हैं तो मरा बन जाता है अर्थात् मृत्यु। इसलिए मनुष्य को जीवन एवं मृत्यु का स्मरण हमेशा बराबर रखना चाहिए। दूसरे शब्दों में जिसको जीवन मिला है उसे मृत्यु का स्मरण भी हमेशा रखना चाहिए। एक ही सांस में जीवन और मृत्यु का स्मरण करना ही राम–राम करने का मुख्य भाव है ।

मौत इस भौतिक संसार का सबसे बड़ा आश्चर्य है क्योंकि यही एक ऐसी प्रक्रिया है जिस पर इंसान का वश नहीं चलता। जन्म एवम् मरण विज्ञान की पहुँच से हमेशा से ही दूर रहे हैं। क्योंकि ये सब कहाँ से नियंत्रित होता है किसी को पता नहीं। स्वयं विज्ञान भी किसी शोध से यह सिद्ध नहीं कर पाया कि यह चक्र कहाँ से संचालित होता है, आखिर में इंसान ने अपना पल्ला झाड़ते हुए इसे भगवान की संज्ञा दे दी। जीवन के इस खेल में मृत्यु हमेशा जीतती है, लेकिन हम इस खेल को कैसे खेलें इसका चुनाव हम स्वयं कर सकते हैं।

इस जीवन के दो कड़वे सच –

जिसकी कोई गारंटी नहीं उसका नाम है **जिंदगी**, और

जिसकी फुल गारंटी है उसका नाम है **मौत**।

अपने जीवन के दौरान मनुष्य को यह चिंतन करना अति आवश्यक है कि उसकी मृत्यु के बाद उसका जीवन कितने लोगों के लिए प्रेरणा बनेगा। उसकी मृत्यु के पश्चात् कितने लोग उसे आजीवन याद रखेंगे। ये केवल वही लोग होंगे जिनकी आपने ऐसे समय पर सहायता की थी जब उनकी सभी उम्मीदें समाप्त हो गयी थी।

जीवन के बारे में किसी ने क्या खूब कहा है–

"रिटर्न टिकट तो कन्फर्म है,
इसलिए मन भर कर जियें,
मन में भरकर न जियें,
छोड़िये शिकायत शुक्रिया अदा कीजिये।
क्योंकि, **रिटर्न टिकट तो कन्फर्म है।"**

प्रगति के पथ पर भारत



अर्चिता
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

भारत हमेशा से ही प्रगातिशील देश रहा है जहाँ सिंधु घाटी जैसी सभ्यता, चाणक्य जैसी नीतिवान सोच तथा बुद्धा जैसे दार्शनिकों ने समाज को ज्ञान और शान्ति की दिशा में प्रेरित किया। आज भी भारत अपनी सांस्कृतिक और पारम्परिक धरोहर को संजोये प्रगति के मार्ग पर अग्रसर है। भारत 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की विचारधारा के साथ एक ऐसा राष्ट्र बनने के लिए प्रेरित है जिसे 'विश्वगुरु' की उपाधि मिल सके।

पिछले कुछ वर्षों में भारत की अर्थव्यवस्था में काफी सुधार देखने को मिला है। भारत अब विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में से एक बन गया है। इसके कई कारक हैं जैसे आजीविका के नए साधन, विदेशी निवेश में बढ़ावा, आधारिक संरचना में सुधार, डिजिटलीकरण आदि। इसके आलावा उद्यमिता में नवीनीकरण के लिए भी कई प्रयास किये गए हैं। स्टार्टअप कल्चर को आगे लाने के लिए कई योजनाएं शुरू की गयी हैं जैसे स्टार्टअप इंडिया और मेक इन इंडिया। लघु व्यापारियों को ऋण उपलब्ध करवाने के लिए भी मुद्रा लोन मुहैया करवाए गए। कोविड–19 के दौरान आत्मनिर्भर भारत पैकेज भी दिया गया।

आर्थिक तौर पर भारत को कुछ चुनौतियों का सामना भी करना पड़ रहा है जैसे आमदनी में असमानता, बरोजगारी, कृषि में विकास की आवश्यकता, प्रदूषण के नकारात्मक प्रभाव, राजकोषीय घाटा, गरीबी आदि। इन चुनौतियों का सामना करने के लिए प्रभावी कदम उठाने की जरुरत है ताकि अर्थव्यवस्था को स्थायी और सशक्त बनाया जा सके।

किसी भी देश की उन्नति में विज्ञान की अहम भूमिका होती है। इस क्षेत्र में भारत के कदम काफी सराहनीय है। हाल ही में भारत ने चंद्रयान–3 मिशन में सफलता हासिल की, इसके आलावा अन्तरिक्ष के कई मिशन जैसे गगनयान, शुक्रयान मिशन, आदित्य मिशन आदि पर भी रफ्तार से काम चल रहा है जो भारत के सामर्थ्य को दर्शाता है।

भारत में अनुसंधान का ध्यान जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण के बदलते मुद्दों के संदर्भ में, स्थानीय प्रभावों को समझने, संशोधन उपायों का विकास करने, और सतत प्रयोजनों को प्रोत्साहित करने पर है। भारत में नवीन ऊर्जा या रिन्यूएबल एनर्जी के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण विकास हुए हैं। भारत ने पहल करके अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (International Solar Alliance, ISA) की शुरुआत की। इसका मुख्य उद्देश्य है सौर ऊर्जा के उत्पादन और उपयोग में वृद्धि करके विश्व के सभी देशों को सहायता प्रदान करना। पवन ऊर्जा, हाइड्रोपावर, बायोगैस, न्यूक्लियर ऊर्जा और ग्रीन हाइड्रोजन जैसे विभिन्न प्रकार के ऊर्जा स्रोत हैं जिन्हें फॉसिल फ्यूल्स के स्थान पर प्रयोग किया जा रहा है। वर्ष 2048 में नेशनल बायोफुएल पॉलिसी भी लायी गयी है। पेट्रोल में एथेनॉल का मिश्रण 5 प्रतिशत से बढ़ाकर 20 प्रतिशत करने पर भी विचार चल रहा है।

शिक्षा और स्वास्थ्य भारत के विकास के लिए अधिक महत्वपूर्ण है। भारत ने 2020 में न्यू एजुकेशन पॉलिसी की नींव रखी। इसका उद्देश्य शिक्षा प्रणाली में नवीनता अथवा विद्यार्थियों को उनकी रूचि के अनुसार शिक्षा उपलब्ध करवाना है। यह भी आवश्यक है कि शिक्षा से विद्यार्थियों का पूर्णांग विकास और कौशल में वृद्धि हो सके। सरकार ने इसके लिए स्किल इंडिया मिशन और कौशल विकास योजना जैसी कई योजनाएं शुरू की जिससें युवा वर्ग को रोजगार के नए अवसर भी मिले हैं। भारत विश्व भर में योग और आयुर्वेद चिकित्सा के प्रचार के लिए भी कई कदम उठा रहा है। इसके फलस्वरुप 21 जून को हर वर्ष 'अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस' के रूप में मनाया जाता है। गरीबों को सस्ते दामों पर दवाईयाँ पहुँचाने के लिए जन औषधि केंद्र स्थापित किये गए तथा आयुष्मान भारत जैसी योजनाओं की भी शुरुआत की गयी है।

देश की प्रगति के लिए नागरिकों का सशक्त होना बहुत जरूरी है। ई–गवर्नेंस के माध्यम से सरकारी

योजनाओं को सुलभ बनाया गया है, ई–नाम (म.छ।ड.छंजपवदंस ।हतपबनसजनतम डंतामज) जो की एक योजना है, से किसानों को फसलों का सही दाम दिलाना, जन–धन योजना से वित्तीय समावेशन को बढ़ावा मिला है। भारत की सामाजिक प्रगति में भी विशेष ध्यान दिया गया है। समाज के निर्माण में सभी वर्गों को समान अधिकार और अवसर प्राप्त होने चाहिए। सरकार ने अनेक कार्यक्रमों की शुरुआत की है, जिनमें गरीबी उन्मूलन, महिला उत्थान और असमानता के खिलाफ लड़ाई शामिल है।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी भारत अपनी नई पहचान बनाता हुआ दिख रहा है। ळ–20 सम्मलेन का आयोजन भारत में होने से अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में भी मजबूती देखने को मिली है। भारत विभिन्न देशों के साथ आर्थिक, सामाजिक, पर्यावरण और राजनैतिक तौर पर विदेश नीति के तहत कई सारे मुद्दों पर विचार कर रहा है। भारत में आर्थिक और सामाजिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए विभिन्न योजनाएं और कार्यक्रम चलाए गए हैं, जिनका उद्देश्य उन्हें समृद्ध और समान समाज के साथ शामिल करना है।

भारत ने नए भारत के रूप में कई नए विकल्प प्रस्तुत किये है जो सामाजिक, आर्थिक, और राजनैतिक विकास में समर्थ है। इस नए विकल्प में, सरकार ने गरीबी उन्मूलन, स्वच्छता, न्याय, और विकास के लिए विभिन्न योजनाओं को शामिल किया है। नये भारत की दिशा में सभी नागरिकों को समान अधिकार, समान अवसर, और समृद्धि के लिए अवसर प्रदान किए जाते हैं।

इस प्रकार, भारत ने अपने विकास के पथ पर महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। यह एक अद्वितीय देश है जिसमें विविधता, विकास और सामर्थ्य का संगम है। 2047 में भारत आजादी के 100 वर्ष पूरे करने जा है इसलिए यह दशक भारत के लिए और भी महत्त्व रखता है जिसके संदर्भ में देश भर में एक नई उर्जा और प्रोत्साहन की संरचना हो रही है। इसे देशभर में आजादी के अमृत महोत्सव के रुप में मनाया जा रहा है। यह समय चुनौतियों का डट के सामना करके भारत को एक प्रगतिशील देश से एक विकसित देश ओर लेकर जाने का है जो विश्व भर के लिए प्रेरणा का स्त्रोत हो।



मेरा बगीचा



सुदेश कुमार
सहायक पर्यवेक्षक

मेरे घर में एक छोटा सा बगीचा है इसमें हर प्रकार के पौधे लगे हुए हैं और इन पौधों में से कुछ पौधों पर सुंदर–सुंदर फूल लगे हुए हैं जैसे गुलाब, सूरजमुखी, गेंदा, गुडहल एवं बोगनेविलिया जो हर किसी का मन मोह लेते हैं। दिनभर पक्षियों का तांता लगा रहता है और सुबह होने पर पक्षियों की चहचहाने की आवाजें आने लगती है ।

मैं रोजाना बगीचे के पौधों को पानी देता हूँ और समय–समय पर इनका ध्यान रखता हूँ। इनमें जरूरत के अनुसार खाद और कीटनाशक भी डालता हूँ। मेरा बगीचा इतना प्यारा है कि यहाँ हवा के झोंके ऐसे लगते है जैसे प्रकृति की गोद में बैठे हों।

घर में बगीचा होने से कई प्रकार के स्वास्थ्य सम्बन्धी लाभ मिलते है। बगीचे में कई ऐसे पौधे होते हैं जो भरपूर ऑक्सीजन देते हैं। बागवानी भी एक बेहतरीन व्यायाम होता है। जब आप बागवानी करते हुए खुदाई करते हैं, उठते हैं, झुकते हैं, तब आप मध्यम शारीरिक व्यायाम कर रहे होते हैं। सूर्य के संपर्क में आने से शरीर में विटामिन 'डी' की पूर्ती होती रहती है। आप बगीचे में समय बिताते हैं तो शरीर में सेरोटोनिन बढ़ाने में मदद मिलती है जो कि बेहतर नींद लेने में मदद करता है। बागवानी से मस्तिष्क की कार्यक्षमता में सुधार हो सकता है। पौधों की देखभाल करना लोगों को उद्देश्य देता है व उनके व्यवहार में लचीलापन लाता है।

मेरे अनुसार घर में बगीचा सबसे अच्छी जगह जहाँ एक व्यक्ति को जीवन की व्यस्तता से राहत मिल सकती है।



भगवान श्री कृष्ण, मीरा और गुरु रविदास महाराज जी .....



सिकंदर कुमार
लेखा परीक्षक

सबसे पहले श्री गुरु रविदास महाराज जी के बारे में जानते हैं। गुरुओं के व्यक्तित्व का पता उनकें सेवकों से चलता है कि उनके गुरु कैसे है क्योंकि हर पापी व्यक्ति अपने आप को पवित्र कह देता है कि मुझसे ज्यादा पवित्र इस दुनिया में कोई नहीं है, मुझसे ज्यादा अच्छा व्यक्ति कोई नहीं है। हर व्यक्ति अपने आप को सबसे श्रेष्ठ, महान व पवित्र समझता है। कहा जाता है कि जिनके आने से हमारे जीवन में शान्ति हो, मन का मैल व बुराई दूर हो, हमारा जीवन बदल रहा हो, मोक्ष की प्राप्ति होती हो तो समझ लेना वह संत कोई भगवान का रूप है। इसी तरह गुरु रविदास जी के जीवन की बात की जाये तो जैसे आप देखते हैं कि आकाश में तारे तो बहुत होते हैं पर ध्रुव तारा एक ही होता है जो बहुत देर तक चमकता है, गुरु रविदास जी भी ध्रुव तारे की तरह थे जो आज भी दुनिया को प्रकाशित कर रहा है।

गुरु रविदास महाराज जी के बारे में बात कर रहे हैं तो उनकी प्रिय शिष्या मीरा जी के बारे में भी जान लेते हैं। मीरा जी ने श्री गुरु रविदास जी को अपना गुरु बनाया था। वह कौनसी झलक थी जो मीरा जी को गुरु रविदास जी में दिखाई दी जिसको देखते ही मीरा जी अपना सिर उनके कदमों में रख दिया, उसके बारे में जिक्र करेंगे।

मीरा जी बचपन से ही भगवान श्री कृष्ण की भक्त थी। भगवान श्री कृष्ण के दर्शन करना चाहती थी। मीरा जी भगवान कृष्ण को पाने के लिये व्याकुल थी। वह वन–वन जाती थी, तीर्थों में जाती थी, मंदिरों में जाती थी, जहाँ कोई कहता कि भगवान कृष्ण मिलेंगे मीरा वहीं चली जाती थी। कहा जाता है कि मीरा ने अपने जीवन के कई साल वृंदावन में गुजारे हैं, इसी उम्मीद में कि मुझे भगवान श्री कृष्ण जी के दर्शन हो जाये। क्योंकि सुना है कि कृष्ण वृंदावन में गायें चराते थे, यहां बांसुरी बजाते थे। कहने का भाव है कि कृष्ण जी के बारे में किसी से कोई भी पता मिलता मीरा वहाँ चली जाती थी। मीरा कई तीर्थ स्थलों पर गई पर भगवान कृष्ण नहीं मिले।

एक समय जब मीरा तीर्थ यात्रा करके वापिस आ रही थीं, वह बहुत उदास और निराश हुई थी क्योंकि इतने साल हो गये पर भगवान कृष्ण जी के दर्शन नहीं हुये थे। एक दिन सुबह यात्रा करते–करते ठहराव किया, तम्बू लगाये और विश्राम किया और सुबह के वक्त मीरा व्याकुल थी और भगवान कृष्ण जी को मन ही मन पुकार रही थी कि अचानक उनके कानों में आवाज आई, कोई भजन गाता जा रहा था। मीरा को उसके शब्द बहुत प्यारे लगे। शब्द बहुत सुन्दर लगे ''ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै, गरीब निवाजु गुसाईआ मेरा माथै छत्रु धरै '' इस तरह के शब्द मीरा ने कभी नहीं सुने और सुनते ही मन को शांति मिली। मन व्याकुल था, सुन कर मन शांत हुआ।

मीरा ने दासियों से कहा यह कौन गा रहा है, उसे बुलाकर लाओ। दासियाँ सैनिकों के पास गई और बोली कि रानी मीरा कह रही है कि यह जो गा रहा है, इसको बुलाकर लाओ। सैनिक भाग कर गये देखा कि एक गरीब किसान गाते हुए अपने खेत में जा रहा था। उसको बुलाया "चलो भाई! रानी साहिबा आपको बुला रही है" उस व्यक्ति को मीरा के पास लाया गया मीरा जी ने पूछा "यह आप गा रहे थे?", व्यक्ति ने उत्तर दिया "जी हाँ मैं ही गा रहा था।" मीरा ने पूछा "ऐसा क्या गा रहे थे जिसे सुन कर मुझे बहुत शांति मिली, बहुत सूकून

मिला? उस व्यक्ति ने मीरा जी को कहा कि मैं अपने गुरु जी की वाणी गा रहा था। ये मेरे गुरु के वचन है, बस वो वचन उच्चारित कर रहा था।

मीरा ने कहा "कौन गुरु? कहां रहते है वो गुरु ? जिनकी वाणी में शांति है, जिनके वचन सुनकर मन को शांति मिल गई, एक बार दर्शन जरूर करना चाहती हूँ।" उस व्यक्ति ने कहा "मेरे गुरु रविदास महाराज जी हैं जो काशी में रहते हैं।"

मीरा के मन में विचार आया कि अब घर पहुँचने से पहले गुरु रविदास जी के दर्शन करते चलें। मीरा ने वहां का पता लिया, वृदांवन से अपने घर जाना था पर मीरा वृदांवन से अपना काफिला लेकर काशी चल पड़ी। यात्रा करते–करते शाम हो चुकी थी, मीरा उस नगर में पहुंची जहां श्री गुरु रविदास जी रहते थे। जब मीरा पहुँची, थोड़ा अंधकार था, सूरज डूबने वाला था, अंधेरा होने वाला था, उस वक्त रविदास अपनी कुटिया में बैठे थे। बाहर सेवक था, उसके पास पहुँची और कहा कि सत गुरु संतो के दर्शन करने हैं। सेवक ने कहा कि वो तो अन्दर बन्दगी में बैठे हैं, सुमिरन में बैठे है, रानी साहिबा आप बाहर इंतजार करें।

मीरा और रविदास की मुलाकात अलग–अलग ढंग से लिखी गई है परन्तु सही मायने में मीरा ने रविदास को अपना गुरु क्यों बनाया? जबकि मीरा भगवान कृष्ण से प्रेम व उनकी भक्ति करती थी फिर मीरा ने अपनी रचनाओं में रविदास का शब्द का जिक्र क्यों किया? उसके पीछे जो कारण था आगे हम उसी के बारे में जानेंगे। जिस वक्त सेवकों ने कहा कि इस समय रविदास सुमिरन में लीन है, आप प्रतीक्षा करें, जब अन्दर से आवाज आयेगी तब आप दर्शन कर लेना। मीरा बैठ गई। अभी थोड़ा ही समय हुआ था कि कुटिया से आवाज आई "हे रानी मीरा! अन्दर आ जाओ।" फिर से आवाज आई "हे रानी मीरा! अन्दर आ जाओ।" मीरा उठी द्वार तक पहुंची और देखा कि दरवाजा बन्द है। मीरा जी ने संकोच किया कि दरवाजा तो बन्द है तो अन्दर से फिर आवाज आयी ''हे मीरा! दरवाजा बन्द नहीं है, आप दरवाजा खोल लें और अन्दर आ जायें।" जैसे ही दरवाजा खोला। मीरा ने जब एक दम देखा तो हैरान रह गई, आसन पर भगवान श्री कृष्ण जी हाथों में बांसुरी लेकर बैठे हुए थे। मीरा हैरान हुई कि जिस भगवान को तीर्थों, मंदिरों, वन में ढूंढा, मथुरा, वृंदावन, गोकुल, द्वारकाधीश ढूंढा, वो यहां बैठे हैं। सारी जिन्दगी निकल गई, वन में गई, पहाड़ों में गई, भगवान कहीं नहीं मिले तो आँखों को यकीन नहीं हुआ, देखा भगवान कृष्ण इशारा कर रहे हैं कि आ जाओ। भगवान कृष्ण बोले "क्या देख रही हो? यह कोई सपना नहीं, यह वास्तविकता है।" मीरा रोने लगी और भाग कर भगवान कृष्ण के चरणों को पकड़ लिया। मीरा भगवान कृष्ण के चरणों पर सिर रखकर रोने लगी और बोली "हे मेरे द्वारकाधीश!, हे मेरे कन्हैया!, हे मेरे भगवान!, हे मेरे गिरधर आप कहां थे?"

गिर कहते है पर्वत को व धर कहते है धारण करने वाले को इसलिये उनको गिरधर भी कहते हैं क्योंकि उन्होनें पर्वत को उठाया था। मीरा जी की वाणी में आपको गिरधर शब्द सुनने या पढ़ने में आयेगा।

"मेरे तो गिरधर नागर, दूसरा ना कोये"

मीरा ने भगवान के चरणों को पकड़ रोने लगी "कहाँ थे आप?" और चरणों पर अपना सिर रखकर काफी देर तक मीरा रोती रही । आवाज आई "मीरा मेरी तरफ देखो" जब उठी तो देखा सामने रविदास जी बैठे थे। मीरा जी सोच में पड़ गई चरण तो रविदास के पकड़े है। भगवान कृष्ण कहाँ गये? मीरा ने देखा कि रविदास मुस्करा रहे थे। एक झलक भगवान कृष्ण की, दूसरी झलक गुरु रविदास महाराज की। मीरा जी को समझने में देर नहीं लगी कि जिस कृष्ण को मैनें जगह–जगह ढूँढा वो तो बहुत साल पहले दुनिया से चले गये पर अब भी

सतगुरु के रूप में मिलते हैं। कहा जाता है कि उस दिन मीरा ने रविदास जी के चरण पकड़ लिये और फिर मथुरा, द्वारकाधीश, वृंदावन व अन्य तीर्थ जाना बन्द कर दिया। जो मंदिरों में नहीं मिला तीर्थों से न मिला वो तो मुझे गुरु के दर्शन में मिला है इसलिये मीरा अपनी वाणी में भी लिखती है कि-

"आठ–साठ तीर्थ सब किये, की वृंदावन फेरी,

सतगुरु बिन, खुली नहीं दिव्य दृष्टि अंधेरी"

अर्थात् आठ–साठ तीर्थ किये, वृंदावन भी गई पर जब तक गुरु नहीं मिले, तब तक भटकती रही और भगवान नहीं मिले। जब सतगुरु मिलते है तब ही अन्दर का पर्दा हटता है और इन्सान को वो मिल जाता है जो इन्सान की मंजिल होती है क्योंकि हम सबकी मंजिल भगवान है।

एक बार एक पर्व के अवसर पर कुछ लोग गंगा–स्नान के लिये जा रहे थे, रविदास के शिष्यों में से एक ने उनसे भी चलने का आग्रह किया तो वे बोले, "गंगा स्नान के लिये अवश्य चलता किन्तु मन तो यहाँ अटका रहेगा तो पुण्य कैसे प्राप्त होगा? जिस कार्य को करने के लिये मन अन्तः करण से तैयार हो वही काम करना उचित होता है। मन सही है तो इसे कठौती के जल में ही गंगा स्नान का पुण्य प्राप्त हो सकता है।" कहा जाता है कि इस प्रकार के व्यवहार के बाद से ही कहावत प्रचलित हो गयी "मन चंगा तो कठौती में गंगा।"

रविदास ने ऊँच–नीच की भावना तथा ईश्वर–भक्ति के नाम पर किये जाने वाले विवाद को सारहीन तथा निरर्थक बताया और सबको परस्पर मिल–जुल कर प्रेमपूर्वक रहने का उपदेश दिया। उनका विश्वास है कि ईश्वर की भक्ति के लिये सदाचार, परहित– भावना का पालन करना अत्यावश्यक है। अभिमान त्याग कर दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार करने और विनम्रता तथा शिष्टता के गुणों का विकास करने पर उन्होनें बहुत बल दिया। मीरा अपनी वाणी में एक भजन में कहती है " कहे रैदास तेरी भक्ति दूरी है, भाग बड़े सो पावै, तजि अभिमान मेटि आपा पर, पिपिलक हवै चुनि खावै।"

कहा जाता है कि मीराबाई उनकी भक्ति–भावना से बहुत प्रभावित हुई और उनकी शिष्या बन गयी थी ।

"वर्णाश्रम अभिमान तजि, पद रज बंदहिजासु की,

सन्देह–ग्रन्थि खण्डन–निपन, बानि विमुल रैदास की।"

मीरा गुरु रविदास महाराज के वचन से बहुत प्रभावित हुई, अपनी वाणी में लिखा कि

"जात न साधु की, पूछ लिजिये ज्ञान,

मोल कीजिये तलवार का, पड़ी रह दो मियान"

मीरा अपनी वाणी में कहती है कि गुरु की कोई जाति नहीं होती और न ही किसी वर्ग, संप्रदाय, धर्म का होता है। वह भगवान का रूप है जो पूरी दुनिया को भगवान का संदेश देने आता है। गुरु की जात पूछना नरक में जाने के समान है इसलिये भगवान ने कहा है कि हे मनुष्य! तू जिस रूप में मुझे याद करेगा, मैं उसी रूप में प्रकट हो जाऊँगा। कहा जाता है कि भगवान निराकार है, उनका अपना कोई आकार नहीं है। उनका आकार ऐसा है जैसे कि वायु जिसे हम देख नहीं सकते पर महसूस कर सकते हैं।

रविदास जी कहते है कि–

"रैदास प्रेम नहिं छिप सकई लाख छिपाए कोय, प्रेम न मुख खोले कभऊँ, नैन देत है रोय।"

प्रेम कोशिश करने पर भी छिप नहीं पाता, वह प्रकट हो ही जाता है। प्रेम का बखान वाणी द्वारा नहीं हो सकता, प्रेम को तो आँखो से निकले हुए आंसू ही व्यक्त करते हैं।

"सौ बरस लौं जगत मंहि, जीवत रहि करू काम। रैदास करम ही धरम हैं, करम करहु निहकाम।।"

मनुष्य को संसार में सौ वर्ष तक जीवित रहने की इच्छा त्याग कर निरंतर निष्काम कर्म करते रहना चाहिये। कर्म करना ही मनुष्य–धर्म है।

"पराधीनता पाप है, जान लेहु रे मीत। रैदास दास पराधीन सौं, कौन करै है प्रीत।।"

हे मित्र! यह अच्छी तरह जान लो कि पराधीनता एक बड़ा पाप है। रविदास कहते हैं कि पराधीन व्यक्ति से कोई भी प्रेम नहीं करता है, सभी उससे घृणा करते हैं।

"रैदास न पूजा पाठ में, कर्म काण्ड में नाहीं। आँख खुली जब प्रेम की, हरी देखा खट माही।।"

रविदास ने बहुत प्यारी बात कही कोई कहता है कि पूजा–पाठ करो तो भगवान मिलेंगे। कोई कहता है कि कर्म काण्ड करो, भगवान मिलेंगे। रविदास कहते है कि भगवान किसी क्रिया–कर्म में नहीं है। मंत्र उच्चारण करो, उसकी पूजा करो, इसकी पूजा करो, करने को तो इस दुनिया में बहुत से कर्म–काण्ड है अगर पूजा–पाठ करने से भगवान मिल जाते तो मंदिरो में सारा दिन पूजा–पाठ होता है तो पुजारियों को कब के भगवान मिल जाते। जरा इस बात को भी सोचो। कई जगह तो मंदिरों में लगातार अखण्ड जाप चल रहा, इस तरह के अखण्ड जाप से भगवान नहीं मिलते। रविदास मीरा को कहते हैं कि भगवान तब मिलेंगें जब इन्सान के अन्दर प्रेम की आँखें खुलेगी, जब मनुष्य के अन्दर प्रेम की भावना होगी जो किसी के साथ जाति, धर्म सम्बन्धी भेदभाव नहीं करता, उसे मंदिर, मस्जिद जाने की कोई जरुरत नहीं।

जब मीरा ने रविदास जी के चरणों में सिर रखा था। उस वक्त रविदास ने पूछा "हो गये भगवान कृष्ण के दर्शन? बचपन से व्याकुल हो रही थी।" तब मीराबाई ने कहा कि भगवान कृष्ण जी के दर्शन भी हो गये और भगवान श्री कृष्ण जी के दर्शन करवाने वाले गुरु रविदास (रैदास) जी के दर्शन भी हो गये। रविदास जी ने हँसते हुए पूछा कि अब जाना है वृदांवन, द्वारकाधीश, गोकुल, मथुरा, आदि? मीराबाई ने मुस्कराकर कहा है "गुरुदेव अब मुझे कहीं जाने की जरूरत नहीं"

मीरा ने कहा "जब गई गुरु कुटि मे, हरी मिला गुरु भई।"

कहने का भाव कि जब हरी गुरु में (भगवान गुरु में) मिल गया, उसकी झलक मिल गयी तो मक्का, हज, हरिद्वार, गंगा–स्नान, वृंदावन, द्वारकाधीश, मथुरा तीर्थ सब व्यर्थ है, इन्सान को भगवान सतगुरु के चरणों में ही मिलता है।

एक यादगार यात्रा

पिछले अंक से जारी.....



रमेश कुमार शर्मा
सहायक पर्यवेक्षक

14–12–2008 सुबह अंकल ने आवाज लगाई कि सारे उठ जाओ, नहा धो–लो, नाश्ता तैयार हो रहा है, सभी जल्दी से तैयार होकर नाश्ता करके बस में सवार हो गए, बस रवाना हो गई, करीब एक घंटे के सफर के बाद बस ओखा पहुँच गई, कुछ ही समय में हम सबका मछलियों की दुर्गन्ध से बुरा हाल हो गया, क्योंकि वहां के मछुआरे व मछली व्यापारियों ने समुद्र से मछलियाँ निकाल कर बंदरगाह के आसपास ही डाली हुईं थी। ओखा से द्वारका भेंट के लिए हम सब एक स्टीमर में सवार हुए और करीब एक डेढ़ घंटे की समुद्री यात्रा के बाद हम द्वारिका भेंट पहुँच गए। यह मान्यता है कि असली द्वारिका भेंट नगरी पूरी सोने की थी जिसका निर्माण श्री विश्वकर्मा जी ने श्री कृष्ण के अनुरोध पर किया था, वो नगरी श्री कृष्ण के इस संसार से प्रस्थान के बाद समुद्र में समा गई थी, समुद्र की गहराई में उस नगरी के कुछ अवशेष भी मिले हैं, यह बात नासा ने भी मानी है। मैंने अपने परिवार सहित वहां की मिट्टी को अपने माथे से लगाया और हम अंकल के पीछे–पीछे श्री कृष्ण मंदिर की ओर चल पड़े, कुछ ही क्षणों में हम अपने गंतव्य यानी कृष्ण मंदिर पहुँच गए, अंकल जी फिर सबके जूतों की रखवाली के लिए मंदिर द्वार पर बैठ गए। इस मंदिर की मान्यता है कि यहाँ कच्चे चावल की भेंट चढ़ाई जाती है, श्री कृष्ण जी के मित्र सुदामा ने यहीं आकर श्री कृष्ण को चावल भेंट किये थे, उनमें से कुछ चावल कृष्ण जी ने खाएं और सुदामा को सुदामा नगरी का राजा बना दिया जिसे आज हम पोरबंदर के नाम से जानते हैं, तब से यह प्रथा चली आ रही है। एक और मान्यता है कि द्वारिका भेंट श्री कृष्ण जी का राज महल था श्री कृष्ण अपनी 16108 रानियों के साथ यहीं रहते थे। सभी ने मंदिर परिसर का अवलोकन किया, श्री कृष्ण–रुक्मणी के दर्शन किये व वापस मुख्य द्वार पर आ गए, सभी को मंदिर परिसर में करीब एक–डेढ़ घंटा लगा अंकल जी वहीं मुख्य द्वार पर सब के जूते व चप्पलों के पास बैठे थे और उनके माथे पर शिकन तक नहीं थी। हम सब वहां से धीरे–धीरे मार्केट का अवलोकन करते हुए चल रहे थे, रास्ते में सभी यात्री कुछ न कुछ खरीददारी करते जा रहे थे, मैंने भी कुछ मोती व शंख खरीदे और फिर सभी पोर्ट पर पहुंचे, ओखा जाने के लिए हम सब एक स्टीमर में सवार हुए, रास्ते में हमारे स्टीमर के साथ–साथ अद्भुत पंछियों का एक झुण्ड चल रहा था, मेरे बच्चों व श्रीमती जी ने अपने साथ चने व मूंगफली के दाने आदि ले रखे थे, बच्चों ने थोड़ी मस्ती के मूड में कुछ चने व मूंगफली के दाने पंछियों की तरफ उछाले, देख कर बड़ा ही अचरज हुआ कि उन पंछियों ने चने व मूंगफली के दाने अपनी चोंच से पकड़ लिये, फिर क्या था मेरे बच्चे व श्रीमती जी पूरे रास्ते अपने साथ रखे चने व मूंगफली के दानों के सभी पैकेट उन अद्भुत पंछियों को कैच करवाते रहे और हाँ मेरी श्रीमती जी भी बच्चों के साथ बच्चा बन गई और चने व मूंगफली के दाने पंछियों को कैच करवाने के साथ जोर–जोर से चिल्ला रही थी हे.....हे.....हे..... आपको यकीन नहीं होगा, वो पंछी भी हमारे स्टीमर के साथ साथ 30–35 किलोमीटर के सफर में साथ चलते रहे, यह दृश्य मुझे व मेरे बच्चों को जब भी याद आ जाता है, तो सबका दिल बहुत ही रोमांचित हो जाता है। हम सब ओखा पोर्ट पर पहुँच चुके थे। अंकल जी ने सभी को बस में सवार होने को कहा। सबके बस में बैठते ही बस पोरबंदर की तरफ रवाना हो

गई, तकरीबन 70–80 किलोमीटर चलने के बाद अंकल जी ने इशारे से बताया कि ये जो पहाड़ी की चोटी पर मंदिर दिखाई दे रहा है, कृष्ण जी की कुल देवी हरसिधी माता का मंदिर है, मैंने अंकल जी से मंदिर के दर्शन का आग्रह किया अंकल ने बिना किसी आनाकानी के बस बाजार में रुकवा दी व घोषणा की "बस एक–डेढ़ घंटा रुकेगी सब मंदिर में दर्शन करके आओ मैं दोपहर का भोजन तैयार करवाता हूँ।" सब धीरे–धीरे पहाड़ी की चढ़ाई चढ़ते गए, जय माता की जय माता की बोलते गए कुछ ही समय में हम मंदिर के प्रांगण में थे। मंदिर से द्वारिका और पोरबंदर का खूबसूरत नजारा दिख रहा था। सबने हरसिद्धि माता के दर्शन किए और कुछ समय मंदिर में व्यतीत करने के बाद वापस बस के पास आये। भोजन तैयार था, सबने भोजन ग्रहण किया और बस में सवार हो गए। थोड़ी देर बाद बस पोरबंदर की तरफ रवाना हो गई और अंकल जी ने बस कीर्ति मंदिर की पार्किंग में रुकवाई। इस मंदिर में महात्मा गाँधी से जुड़ी बहुत सी चीजें रखी हुई हैं जो कि शांति का प्रतीक हैं। यह भारत की परंपरागत शैली में बनाया गया बहुत ही खूबसूरत मंदिर है। थोड़ी देर में बस सुदामा मंदिर के लिए रवाना हो गई। सुदामा मंदिर पोरबंदर के प्रमुख मंदिरों में शामिल है। यह मंदिर भगवान श्री कृष्ण के मित्र सुदामा जी को समर्पित है। यह परम्परागत भारतीय शैली में बनाया गया है। इस मंदिर के प्रांगण में शानदार बगीचा और एक छोटा सा तालाब है जिससे मंदिर की खूबसूरती कई गुणा बढ़ जाती है। मंदिर में लाख चौरासी पॉइंट भी बना हुआ है। मान्यता है कि इसकी परिक्रमा से मनुष्य लाख चौरासी के जंजाल से मुक्त हो जाता है। मंदिर के दर्शनोपरांत हम कुछ समय वहां के बाजार में घूमे और जब बस के पास वापिस आये तो अंकल जी ने चाय बनवा रखी थी। सबने चाय नाश्ता ग्रहण किया और बस में सवार हो गए। बस सोमनाथ की तरफ रवाना हो गई। रास्ते में अंकल ने बस समुद्र के एक बहुत ही सुंदर बीच पर रुकवा दी और हिदायत दी कि 15–20 मिनट लहरों का अवलोकन करो और वापिस आ जाओ। यहां समुद्र बहुत ही गहरा है ज्यादा आगे नहीं जाना है। समुद्र की लहरें बहुत ही विकराल नजर आ रही थी। सबने समुद्र की लहरों का आनंद लिया। हमने वहां नारियल पानी पिया और नियत समय में आकर बस में बैठ गए। दो घंटे के सफर के बाद बस श्री सोमनाथ मंदिर के ठीक सामने आकर रुकी। यह मंदिर भारत के पश्चिम छोर पर स्थित है। सोमनाथ मंदिर भगवान् शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों में से सर्वप्रथम स्थान पर है। यह गुजरात के सौराष्ट्र क्षेत्र के वेरावल बंदरगाह पर स्थित है। यह अत्यंत प्राचीन एवं ऐतिहासिक शिव मंदिर है। ऐसी मान्यता है कि इस मंदिर का निर्माण स्वयं चंद्रदेव ने किया था जिसका उल्लेख ऋग्वेद में स्पष्ट है और यह भी कहा जाता है कि इस मंदिर का निर्माण मैत्रक गुर्जर वंश तथा पुनर्निर्माण नागभट्ट व मिहिरभोज ने किया था। वर्षों से सोमनाथ मंदिर दर्शन की जो इच्छा थी, आज वो पूरी हुई। यह वो प्रसिद्ध मंदिर है जिसे आक्रांताओं ने बहुत बार लूटा और हर बार मंदिर के पुजारियों की हत्या की। वर्तमान भवन का निर्माण सरदार वल्लभ भाई पटेल ने करवाया और 1 दिसम्बर 1955 को भारत के राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने इसे राष्ट्र को समर्पित किया। सोमनाथ विश्वप्रसिद्ध धार्मिक एवं पर्यटन स्थल है। मंदिर प्रांगण में साढ़े सात से साढ़े आठ बजे तक एक घंटे का साउंड व लाइट शो चलता है जिसमें सोमनाथ मंदिर के इतिहास का बड़ा ही सुंदर सचित्र वर्णन किया जाता है। यह भी मान्यता है कि श्री कृष्ण ने यहीं पर देह त्याग किया था। इस कारण इस स्थान का महत्व और भी बढ़ जाता है। मंदिर दर्शन उपरान्त बाजार का थोड़ा अवलोकन करते हुए हम सब बस के पास पहुंच गए। सब बस में सवार हुए, बस चल पड़ी और एक स्कूल में जाकर रुकी क्योंकि छुट्टियों के कारण सब धर्मशालाएं बुक थी। सब बस से उतरे, अंकल जी ने कहा कि थोड़ी

देर में भोजन तैयार हो जाएगा। करीब एक घंटे में भोजन तैयार हो गया। सब खाना खाकर थोड़ी देर विश्राम करने लगे। रात के 2:30 बजते ही अंकल जी की आवाज गूंजी "जल्दी उठ जाओ, चाय पी लो ते बस और बैठो बड़ी दूर जाना है, लंबा सफर है।" 15–12–2008 सुबह के 3:15 बज चुके थे, सब बस में सवार हुए और अंकल ने जयकारा लगाया "जयकारा वीर बजरंगी" जिसकी आस्था थी उन सबने बोला "हर–हर महादेव" और बस माउंटआबू के लम्बे सफर के लिए रवाना हो गई। हमारी बस 16–12–2008 को सायं साढ़े तीन बजे के आसपास 36 घंटे का सफर तय करके माउंट आबू के रघुनाथ मंदिर के पास पहुँच गई। माउंट आबू में कड़ाके की ठंड पड़ रही थी। तापमान जीरो डिग्री था, सबको कंपकंपी चढ़ी हुई थी। अंकल जी की कैटरिंग टीम ने सबका सामान उतरवाकर पहले से बुक रघुनाथ मंदिर की धर्मशाला में रखवाया और सबसे कहा भगवान् रघुनाथ के दर्शन करो तब तक मैं चाय नाश्ता तैयार करवाता हूँ। सभी फ्रेश होकर दर्शन करके चाय की चुस्कियों के साथ नाश्ता करने लगे। अंकल जी ने बताया कि कुछ ही दूरी पर सनसैट पॉइंट है, जल्दी से जाकर वहां की ऊंचाई से सूर्यास्त का नजारा देख के आओ फिर यहाँ के मार्केट में घूम आना। जिसने खरीददारी करनी है वो कर लेना, सबको रात का भोजन तैयार मिलेगा। इतनी ठंड के बावजूद सनसैट पॉइंट से सनसैट का नजारा देखने की उत्सुकतावश तेज गति से चलते–चलते शरीर में पूरी गर्मी आ चुकी थी। हम सनसैट पॉइंट पर पहुंचे। इतनी ऊंचाई से पहली बार सूर्यास्त का नजारा देख कर हम सभी का दिल बाग–बाग हो गया। सूर्यास्त का नजारा देखने के उपरांत हम तेज गति से माउंट आबू के बाजार में पहुँच गए। कुछ समय बाजार की भव्यता का अवलोकन किया, थोड़ी बहुत खरीददारी करने बाद रघुनाथ मंदिर पहुँचे। सब ने फ्रेश होकर रात का भोजन ग्रहण किया जो अंकल जी ने अभी–अभी तैयार करवाया था। भोजन के बाद सभी ने बिस्तर पकड़ा और सो गए। 17–12–2008 सुबह चार बजे अंकल की आवाज गूंजी "सारे उठ जाओं, नहा धो लो, मंदिर में रघुनाथ जी के दर्शन करो तब तक मैं चाय–नाश्ता तैयार करवाता हूँ।" सभी नहा–धो के, जिसकी इच्छा दर्शन की थी उसने रघुनाथ जी के दर्शन किए, मैंने अपने परिवार के साथ रघुनाथ जी दर्शन के बाद नाश्ता करके मंदिर के साथ स्थित नक्की झील का नजारा देखने लगा जो कि बहुत ही अद्भुत थी। मेरा परिवार बहुत ही रोमांचित हो रहा था। माउंट आबू के पहाड़, झील आदि देखकर बिलकुल भी आभास नहीं होता कि हम राजस्थान में हैं। माउंट आबू बहुत ही सुंदर हिल स्टेशन है। जल्दी–जल्दी नाश्ता कर के सब फ्री हो गए व बस में आकर बैठ गए। अंकल जी ने ड्राईवर को आबू माता के मंदिर चलने के लिए बोला। माउंट आबू शहर का नाम आबू माता के नाम से पड़ा है। जिस पहाड़ी की चोटी पर माता का मंदिर स्थित था, बस उसकी तलहटी में आकर रुकी। अंकल जी ने सभी को बोला कि जिसको दर्शन करने हैं कर आओ बस दो घंटे रुकेगी। कुछ परिवार मंदिर दर्शन को जाने के लिए तैयार हुए, मेरा परिवार भी बस से उतर गया। मैंने मेरे सहयोगी से चलने के लिए पूछा तो उसने यह कह कर मना कर दिया कि मंदिर सारे एक जैसे होते हैं, हमें नहीं जाना। जिनकी इच्छा थी वो सब मंदिर की ओर चल पड़े। मंदिर की चढ़ाई बहुत कठिन थी लेकिन मन में अगर सच्ची श्रद्धा हो तो कुछ भी कठिन नहीं होता। कुछ ही पल में हम माता के मंदिर में दर्शनों की कतार में खड़े थे। आबू माता के दर्शन किए और हमने पहाड़ की चोटी से माउंट आबू शहर का अद्भुत नजारा देखा। करीब एक घंटे में हम बस के पास आ गए। बस में बैठे और बस देवराला जैन मंदिर की ओर चल पड़ी। थोड़े ही समय में बस देवराला जैन मंदिर की पार्किंग में पहुँच गई। अंकल ने कहा कि सब उतर कर मंदिर के दर्शन करके एक–डेढ़ घंटे में बस के

पास आ जाना। सभी उतरे और जिसकी इच्छा थी वो देवराला जैन मंदिर के दर्शन हेतु कतार में लग गया। मंदिर में महावीर स्वामी की विशाल मूर्ति के दर्शन किए और करीब डेढ़ घंटे बाद बस के पास पहुँच गए। सब बस में बैठे और बस माउंट आबू के अंतिम दर्शनीय स्थल ब्रह्म कुमारी आश्रम की ओर चल पड़ी। कुछ ही पल में बस ब्रह्म कुमारी आश्रम जो कि ब्रह्म कुमारी मुख्यालय भी है, में पहुँच गई। सभी बस से उतरे और पूरे आश्रम का भ्रमण किया, एक–दो प्रवचन सुने, वहां चाय का प्रसाद ग्रहण किया और बस में आकर बैठ गए। बस रघुनाथ मंदिर कि ओर चल पड़ी। कुछ समय के बाद बस श्री रघुनाथ मंदिर पहुँच गई, सायंकाल के साढ़े सात बज चुके थे। अंकल ने घोषणा करी कि जिसको दर्शन करने हैं, दर्शन कर लो तब तक रात का भोजन तैयार हो जाएगा। मैं अपने परिवार के साथ बस से उतरा और रघुनाथ जी के दर्शन किए। सारे दिन के थके थे तो थोडा आराम किया, फिर भोजन ग्रहण किया और आकर बिस्तर पकड़ लिया। रात के 9 बज चुके थे अंकल ने कहा कि थोड़े लम्बे हो लो रात को 2 बजे उठना है, मथुरा वृन्दावन के लिए चलना है। सबने बिस्तर पकड़ लिया, 4–5 घंटे कैसे बीते पता ही नहीं चला। ठीक 2 बजे अंकल ने उठा दिया, 2.30 बजे बस में सवार हो चुके थे। बहुत से लोगों ने आगरा की रट लगा रखी थी, लेकिन अंकल का मन मथुरा वृन्दावन ले जाने का था, अधिकतर लोग जिनमें मेरा सहयोगी भी था आगरा जाने के इच्छुक थे, अंकल ने कहा ठीक है। रास्ता 700 किलोमीटर का था, बस 18–12–2008 सुबह 4 बजे माउंट आबू से आगरा की ओर चल पड़ी और 19–12–2008 को दोपहर 2 बजे बस, आगरा के ताजमहल की पार्किंग में पहुँच कर रुक गई। बहुत सी आत्माएं तो मानो ताजमहल देखकर तृप्त ही हो गई। सबने ताज महल देखा और 4 बजे बस के पास आ गए। मेरे सहयोगी जो कि राधा स्वामी के दयाल बाग आगरा शाखा के दर्शन के अभिलाषी थे, हमने अंकल जी से वहां जाने को कहा तो अंकल बस दयाल बाग ले गए। हम भी उनके साथ अच्छी भावना से डेरा दयाल बाग गए। मेरे सहयोगी की तो जैसे आत्मा ही तृप्त हो गई, उन्हें खुश देखकर हमें भी खुशी हुई। हमारी तो आदत है सभी धर्मों व पंथों का सम्मान करना। डेरे के दर्शनों के बाद सभी आकर बस में बैठ गए। बस गुरुद्वारा (गुरु की ताल) में आकर रुकी। सबने फ्रेश होकर माथा टेका, लंगर छका और सो गए। अंकल ने हमें 20–12–2008 सुबह 4 बजे फिर उठा दिया बोले कि उठ जाओ नहा धो–लो और चाय पीकर बस में बैठ जाओ हमें मथुरा वृन्दावन जाना है। सभी तैयार होकर चाय नाश्ता लेकर बस में बैठ गए। सुबह के 5 बज चुके थे, अंकल ने ड्राईवर को वृन्दावन चलने का निर्देश दिया, बस चल पड़ी और सुबह 6–15 पर अटेला चुंगी, वृन्दावन जाकर रुक गई। मैंने अपने परिवार सहित बस से उतरकर वृन्दावन की धूल को अपने माथे से स्पर्श किया और एक ब्रजवासी से मंदिरों के दर्शन हेतु पूछा तो उन्होंने बताया कि मंदिर दर्शन 7 बजे खुल जायेंगे मैंने यह बात सबको बताई। अधिकतर यात्रियों ने शोर मचाना शुरू कर दिया कि हमें दर्शन नहीं करने, इस शोर में मेरा सहयोगी भी बोल रहा था कि सीधे चंडीगढ़ चलो हमें मंदिरों में नहीं जाना, मूर्तियाँ सारी एक जैसी होती हैं जबकि उनकी वजह से हमने आगरा में अपने दस घंटे बिताये जो कि हमारे प्रोग्राम में भी शामिल नहीं था। उन सबके शोर में मुझ जैसे कई वृन्दावन के श्रद्धालुओं की आवाज दब कर रह गई। 20–12–2008 सुबह की बेला में वृन्दावन की धरती पर होते हुए भी हम भगवान् श्री कृष्ण (श्री बांके बिहारी जी) के दर्शनों से वंचित रहे। अगर कुछ समय यानी एक दो घंटे और रुक जाते तो हमें श्री बांके बिहारी जी के दर्शन हो जाते। मेरी आँखे सजल होकर रह गईं, इतने शोर मचाने वालों के आगे मेरी एक ना चली। शायद सभी थक चुके थे तो मैंने बांके बिहारी श्री कृष्ण से मन ही मन क्षमा मांगी और सजल

नेत्रों से बस में सवार हो गया और अंकल ने बहुमत का ध्यान रखते हुए बस को चंडीगढ़ के लिए रवाना कर दिया। बस सायं 5 बजे चंडीगढ़ पहुँच गई, अंकल जी ने सभी को उनके घरों में छोड़ दिया। यह यात्रा इतनी अद्भुत व मनोरम थी कि तकरीबन छः हजार किलोमीटर की थका देने वाली यात्रा होने के बावजूद भी सभी ने भरपूर आनंद लिया बावजूद इसके उन्होंने मथुरा वृन्दावन में आकर हमारी भावना को ठेस पहुंचा कर शोर मचाना शुरू कर दिया, यह तो अनुचित था। अंततः पूर्ण यात्रा बड़ी ही मनोहारी, कभी ना भूलने वाली व हृदय पर गहरी छाप छोड़ देने वाली रही। यात्रा के खट्टे–मीठे अनुभव मैंने आपके समक्ष रख दिए हैं। इसमें अगर सब सच लिखने के बावजूद अगर किसी की भावना को ठेस पहुंची हो तो मुझे इसके लिए खेद है। इस यात्रा के एक–डेढ़ साल बाद हमें मालूम पड़ा कि अंकल जी का देहावसान हो गया, सुनकर हमें बहुत ही दुःख हुआ। उनकी करवाई हुई यह यात्रा हमारे दिलों पर गहरी छाप छोड़ गई। आज भी कभी–कभी हमारे कानों में उनकी आवाज गूंजती महसूस होती है। हमने भगवान से उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की। पूरे रास्ते में किसी भी यात्री को 12 दिन की यात्रा के दौरान लघुशंका या दीर्घशंका के लिये बस रुकवाने की आवश्यकता नहीं पड़ी क्योंकि अंकल जी को मधुमेह (शुगर) थी इसलिए बार–बार लघुशंका जाना उनकी मजबूरी थी। जैसे ही उनकी मजबूरी होती तो वो चिल्ला–चिल्ला कर कहते "भई ईजी हो लो, बस 10–15 मिनट रुकेगी" सभी यात्री सकून की साँस लेते और फ्रेश हो कर फिर बस में बैठ जाते थे। सफर में सभी को बहुत ही आनंद की अनुभूति हो रही थी। अंकल जी की कैटरिंग का भोजन अच्छा व बिल्कुल सादा था। एकाध को छोड़ कर किसी का भी पेट खराब नहीं हुआ। अगर हमें इतने लम्बे सफर में होटलों या ढाबों में खाना पड़ जाता तो सबकी तबियत खराब हो सकती थी।

हिन्दी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्त्रोत है

– सुमित्रानंदन पंत

कार्यालयीन गतिविधियाँ



स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर सुश्री नाज़ली जे शाईन, प्रधान महालेखाकार महोदया अन्य अधिकारियों तथा कर्मचारियों के साथ ।



प्रधान महालेखाकार महोदया "सुगंधा" पत्रिका का लोकार्पण करते हुए।

कार्यालयीन गतिविधियाँ



स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर प्रधान महालेखाकार महोदया पुरस्कार प्रदान करते हुए।



महिला दिवस के अवसर पर प्रधान महालेखाकार महोदया पुरस्कार प्रदान करते हुए।

कार्यालयीन गतिविधियाँ



मनोरंजन दिवस के अवसर पर अधिकारी व कर्मचारी रस्सा–कसी प्रतियोगिता में भाग लेते हुए।



हिन्दी पखवाड़े के दौरान वरिष्ठ उप महालेखाकार महोदया पुरस्कार प्रदान करते हुए।

कार्यालयीन गतिविधियाँ



कार्यालय में वन–महोत्सव के दौरान अधिकारी व कर्मचारीगण।



रक्तदान शिविर के दौरान सुश्री रनदीप कौर औजला, वरिष्ठ उप महालेखाकार महोदया।

कार्यालयीन गतिविधियाँ



लोहड़ी पर्व के अवसर पर कार्यालय के कार्मिक सांस्कृतिक कार्यक्रम (गिद्दा) प्रस्तुत करते हुए।



कार्यशाला के दौरान अधिकारी व कर्मचारी।


कविता

ABCD संविधान



नवीन कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

A से एप्पल, B से बाल ना S से बात स्वान की....
अपना संविधान, है बड़ा महान...
लागू ये संविधान हुआ था 26 जनवरी दिन था प्यारा,
1950 साल था, खुश था हिन्दुस्तान सारा

अपने अधिकारों का ये जादू का है पिटारा
कर ले बातें अम्बेडकर की राजिंदर महान की,
A से एप्पल, B से बाल ना S से बात स्वान की....

A से बनता एडमिनिस्ट्रेशन, जिससे चलती सरकारें
B से बनता बैलेट बॉक्स जिसमें डालते वोट सारे
C नाम है कॉन्स्टिट्यूशन जिसको हम संविधान पुकारे
D जो डेमोक्रेसी है बात उसके गुणगान की
A से एप्पल, B से बाल ना S से बात स्वान की....

E से इलेक्शन होता है, जिसे चुनाव कहते हैं
F से होती फ्रीडम कि हम, आजादी से रहते हैं
G से टैक्स का ढांचा, जिस कर को हम सहते हैं
H से हॉलिडे होती है, छुट्टी बड़े आराम की
A से एप्पल, B से बाल ना S से बात स्वान की...

I इंडिपेंडेंस उसका स्वतंत्रता नाम है
J से जो जज साहिब है, न्याय उन्हीं का काम है
K की नॉलिज ज्ञान बटें तो शिक्षित हर जन आम है,
L से लॉ में होती बातें, कानून और विधान की
A से एप्पल, B से बाल ना S से बात स्वान की...

M जो मनी का मैटर है वो, धन भी बहुत जरूरी है,
N की नीड जरूरत भी, होती इसी से पूरी है,
O से ऑफेन्स अपराधों की, ऐसी क्या मजबूरी है
P से पुलिस व्यवस्था है, अपराधों के संज्ञान की
A से एप्पल, B से बाल ना S से बात स्वान की...

Q जो कवेस्चन ऑवर है वो लोकसभा का प्रश्नकाल है,
R से जो अधिकार राइट्स है, उन पर होता वहाँ सवाल है,
S जो स्टेट्स है उन राज्यों से, भारत देखो बुना जाल है,
T के टैक्स से विकसित होते हरपल हिन्दुस्तान की
A से एप्पल, B से बाल ना S से बात स्वान की...

U से यूनिफार्म जैसे, सेना की जो वर्दी है
V से वोट जरूरी चाहे, है गर्मी या सर्दी है
W से विटनेस गर जालिम ने, जुल्मों की हद कर दी है
X से होता एक्स–रे करनी गर जांच किसी सामान की
A से एप्पल, B से बाल ना S से बात स्वान की...

अब तो केवल दो अक्षर जो, बाकी बचे नगीना है
Y देश का यूथ जवान है, देश की खातिर जीना है
Z जील ऐसी हो हम में, मेहनत का खाना–पीना है
कसम उठाले देश की खातिर बाजी लगा दे प्राण की
A से एप्पल, B से बाल ना S से बात स्वान की...

व्यथा एवम् यात्रा ऑडिट पैरे की



राजीव सूद
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

ठोक के सीना तान, संभाली एक अधिकारी ने मुझे (ऑडिट पैरा) बनाने की कमान

ढूंढा गया मुझे ढेर सारी फाइलों और कागजों में,
शक्ल मिली मुझे अधिकारी के लाजवाब अल्फाजों में

मुझे लिखते–लिखते जब अधिकारी ने कुछ और जानने की इच्छा जताई,
यह सुनकर यूनिट वालों में अजब सी मायूसी थी छाई
मुद्दा समझने समझाने में दोनों पक्षों में हुई शब्दों की
खूब लड़ाई

अब मैं आई–आर के भाग 'क' में शान से प्रस्तावित हुआ,
मुझे पढ़ते ही जैसे वैटिंग वालों को किसी करंट ने छुआ

केवल चार कागजों से मुझे था ऑडिट पार्टी ने बनाया,
उच्च अधिकारियों से जैसे तैसे मेरा नामकरण एस. आई. आर. हो पाया

तद्पश्चात डी. पी. सेल ने मुझे सँवारने हेतु 50 कागज और मांग डाले,
यह पता लगते ही पैरा डिवेलपर के मुंह पर तो लगने लगे ताले

कुछ और कागज एकत्र होते ही मैं पदोन्नत होकर बना एस. आई. आर. से टी. डी. पी.,
इस मशक्कत में ना जाने कितनों के मैंने बढ़ा दिए
बी. पी.

अब की बार जैसे ही पहुंचा मैं रिपोर्ट कक्ष के पार्लर में,
हवा लगी ठुस होने मेरी पल ही भर में

कैसा बेसिर–पैर का टी. डी. पी. है डी. पी. सेल ने बनाया,
तिल का ताड़ बनाकर केवल समय है गंवाया

अकस्मात मेरे जैसों को डी. पी. बनाने के लक्ष्य जब सामने आए,
आनन फानन में मेरे समझो अच्छे दिन थे आए

अब लगा मैं संवरने रिपोर्ट के पार्लर में कुछ ऐसा,
लगूं खड़ा आईने में खूबसूरत नायिका जैसा

बैच की डोली में बैठ पहुंचा मैं अब दिल्ली की ससुराल,
जहाँ मुझे पढ़ते ही खड़े हुए 36 और सवाल,
अब तो आ रहे थे मानों सभी को मेरे ही ख्याल

और अंततः मेरी हुई तब जाकर असली पहचान,
जब मिला मुझे मुद्रित प्रतिवेदन में अपना एक उचित स्थान

मुद्रित रिपोर्ट में देख मुझे मेरे डिवेलपर ने खुशी जताई,
कार्यालय समारोह में प्रधान महालेखाकार से उसने बधाई की सौगात भी पाई

इस तरह आया मेरी यात्रा का अब अंतिम चरण,
पी. ए. सी. में मेरी चर्चा हेतु शुरु हुआ अब अगला प्रकरण

एहसास



आशीष कुमार जाँगीड़
कनिष्ठ अनुवादक

सर्द की वो सुबह और बस तुम हो मेरे साथ में
एक हाथ में चाय और दूजा हाथ तेरे हाथ में

प्याला है गरम बस किनारा चूम लेता हूँ
ख्यालों में तेरे साथ सारा जहां घूम लेता हूँ
चाय क्या चाय में तेरा एहसास ढूंढ लेता हूँ
साँसों में पा तेरी मौजूदगी आँखें मूँद लेता हूँ

पीते–पीते जैसे प्याला हुआ आधा मेरा
दिल वजीर, दिमाग हुआ प्यादा तेरा
वो प्रेम ही क्या जो आधा तेरा आधा मेरा



या ज्यादा मेरा कम तेरा या कम तेरा ज्यादा मेरा
सच तो क्या ख्यालों में भी दूरी सही ना जाए
दूजा चाय के खत्म होने का भी मुझको डर सताए
वो प्रेम भी क्या प्रेम जो दर्द और दूरी ना लाये
बीते दिन धीरे–धीरे ये लम्हा बस थम सा जाए

बयां क्या करूँ अब मेरी खोज यहाँ से आगे नहीं
छोड़ दिल को मेरे दर्द कहीं भागे नहीं
तेरे ख्यालों में जो खोए आज तक जागे नहीं
क्या लिखू मैं अब लिखना भी अच्छा लागे नहीं

न कोई था ना कोई है ना कोई आएगा बाद में कभी
हम तेरे आज भी है लाजमी है रहेंगे बस तेरे राख में भी।

लगता है, चुनाव आ रहे हैं



कुलविंदर सिंह
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

दो रूपए पैट्रोल और
तीन रूपए डीजल हुआ है सस्ता,
हमारे गांव का कई सालों से टूटा हुआ
बन रहा है रस्ता

आप का सब काम करेगें, यह कह कर नेता,
शहर–शहर, गांव–गांव में, चक्कर लगवा रहे हैं
अरे भाई, लगता है चुनाव आ रहे हैं

सुना है नौकरियों की बरसात होगी हर तरफ,
चुनाव के बाद देखना, कुछ नहीं पड़ेगा फर्क

हजार रूपए हर औरत के खाते में आयेंगे,
बिजली का बिल माफ करने को कहेंगें
रोजगार दो हमें, भीख नहीं चाहिए
अरे भाई मुफ्त का अनाज देकर,
हमें भिखारी मत बनाइए
सबको नौकरी देंगे, ऐसे झूठे नारे लगा रहे हैं
अरे भाई, लगता है चुनाव आ रहे हैं

जीत गए तो एक सप्ताह में नशा बंद कर देंगे,
दिन में सभी को यही कहेंगें,
रात को घर–घर जा कर, शराब की बोतलें पंहुचा रहे हैं
अरे भाई, लगता है चुनाव आ रहे हैं

बताओ मर्दो ने तुम्हारा क्या है बिगाड़ा?
हर तरफ रेलगाड़ी और बसों का बढ़ा दिया है भाड़ा,
औरतों की टिकट पहले से ही कर दी है माफ,
ड्राईवर व कंडक्टर रोज औरतों से झगड़ा कर दे रहे हैं श्राप

काश महीने में एक दिन फ्री सफर मर्दो का भी आता,
सब काम छोड़ हर कोई फ्री में अमावस्या नहाता
हिंदू–मुस्लिम के नाम पर झगड़ा करवा रहे हैं
अरे भाई, लगता है चुनाव आ रहे हैं

पहले गैस के दाम बढ़ा कर, अभी थोड़ी कर दी सस्ती
पता है कितनी खुशी है, हर मोहल्ले हर बस्ती
गेहूं, चावल और चाय पत्ती भी फ्री में मिलेगी
तभी तो देश में खुशियां खिलेंगी,
सुना है कुलविंदर को, चंडीगढ़ से टिकट दिलवा रहे हैं
अरे भाई, लगता है चुनाव आ रहे हैं

नारी



कविता गुप्ता
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

नारी तू है जगत–जननी, जगदम्बा, जगकल्याणी
पर अफसोस तेरी शक्ति न इस जग ने पहचानी

बेटी, बहन, माँ, पत्नी और मित्र बनकर,
हर रिश्ता है तूने दिल से अपनाया,
घर हो या समाज हर कर्तव्य को शिद्दत से निभाया
फिर भी इस पुरुष प्रधान समाज में,
तुझे ना अपना स्थान मिल पाया

कंधे से कन्धा मिलाकर तू पुरुषों के साथ खड़ी है,
जब भी देश को तेरी जरूरत पड़ी तू दुश्मन से भी लड़ी है
जीवन के हर क्षेत्र में चुनौतियां भरी पड़ी हैं,
पर उनका डट कर सामना करके तू आगे ही बढ़ी है

मत खोने दे अपने अस्तित्व को तू,
जीवन की इस दौड़ में
रुक, ठहर और विचार कर,
जरा अपनी खुशी का भी ख्याल कर
प्रेम, करुणा और धैर्य तेरी शक्ति है,
इनकी मदद से तू सब मुश्किलों को पार कर

माना तुझे घर में और बाहर दोगुना कर्तव्य निभाना,
हौसला तेरा पस्त हो, कोशिश करेगा ये जमाना
पर रुकना नहीं है तुझे और न ही घबराना,

बस कोशिश करते रहना है और अपना सर्वश्रेष्ठ है देते जाना
बस कोशिश करते रहना है और अपना सर्वश्रेष्ठ है देते जाना

धरती करे पुकार



तुषार कांती सिन्हा
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

मैंने तुझे क्या क्या न दिया,
ये नदियाँ ये झरने, आभूषण और गहनें
उड़ती हुई तितलियाँ,मचलती हुई मछलियाँ
गगन के सितारे,चांदनी के नजारें
पीपल की छाँव वो सुंदर सा गाँव
फूलों की खुशबू, उगता हुआ सूरज रूबरू
हसीनों की नज़ाकत, जीने की इजाज़त
चेहरे की मुस्कुराहट, फुलवारी की सजावट
मद मस्त जवानी, गंगा का पानी
ममता और प्यार, राखी का त्यौहार
जिंदगी का वजूद, गाय का दूध
सुंदर सा बदन, महकता हुआ चमन
बदले में तूने मुझे क्या दिया, ढेर सा कचरा,
आपस में लफड़ा, घर–घर मे झगड़ा
चारों ओर नफरत की आग, नदियों मे बहता गंदगी का झाग,
द्वेष और राग
मैंने गंगा दी, मैनें जम–जम दिया,
बदले में, तूने नफरत दिया, दंगा दिया
हे मानव अब तो जाग, अब तो जाग
रख न सका तू मेरा मान, कैसे होगा तेरा कल्याण



सवेरा आज नहीं तो कल हो जाएगा

धर्म सिंह मीना
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

सब्र कर मसला हल हो जाएगा, जो दिल पर है
भार वो भी एक दिन हल्का हो जाएगा
चलता रह इंतजार न कर, सवेरा आज नहीं तो कल हो जाएगा

घबराता क्यों है ये ही तो जीवन चक्र है,
एक दिन सबको तुझ पर फक्र हो जाएगा,
सवेरा आज नहीं तो कल हो जाएगा

ये जो कठिन समय है ये भी एक दिन पार हो जाएगा,
जब आएगी नई सुबह तो वो चमत्कार भी हो जाएगा
सवेरा आज नहीं तो कल हो जाएगा

दिन के बाद रात और रात के बाद फिर से उजाला हो जाएगा,
चिंता क्यों करता है
सवेरा आज नहीं तो कल हो जाएगा

न डर तू इन टेढ़े–मेढ़े रास्तों से,
इनको पार करने पर ही तू तैयार हो जाएगा, चिंता क्यों करता है
सवेरा आज नहीं तो कल हो जाएगा

तुझे लड़ना है आगे बढ़ना तभी ये जीवन सफल हो पायेगा,
सवेरा आज नहीं तो कल हो जाएगा,
सवेरा आज नहीं तो कल हो जाएगा



ताकत–ए–आत्म

मोनिका
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

ताकत–ए–आत्म तुम्हें पहचाननी होगी,
और हो कर रूबरू ताकत–ए–रूह से,
फिर कीमत अपनी तुम्हें आंकनी होगी।

जो बख्शी हैं खुदा ने तुम्हें नेमतें हज़ार,
वह सारी अब तुमको पहचाननी होंगी
और हो कर रूबरू ताकत–ए–रूह से,
फिर कीमत अपनी तुम्हें आंकनी होगी।

राह में मिलेंगी मुश्किलें हजार,
पर रास्ते की हर दीवार तुम्हें लांघनी होगी
और हो कर रूबरू ताकत–ए–रूह से,
फिर कीमत अपनी तुम्हें आंकनी होगी।

लिहाफ–ए–रूह है औरत या आदमी होना,
यह बात अब तुमको जाननी होगी
और हो कर रूबरू ताकत–ए–रूह से,
फिर कीमत अपनी तुम्हें आंकनी होगी।

ताकत–ए–आत्म तुम्हें पहचाननी होगी,
और हो कर रूबरू ताकत–ए–रूह से,
फिर कीमत अपनी तुम्हें आंकनी होगी।



फिर बारिश

मानसी दुबे
सुपुत्री श्री प्रमोद कुमार दुबे
(वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी)

हां आज फिर से बादल बरसा,
ठंडी ठंडी हवाओं के पीछे फिर बारिश आई और
मेरे अंदर की कवियत्री अकस्मात ही फिर कूद बाहर आई।

मैंने पूछा क्यों हमेशा आ जाती हो?
जब–जब होती है बारिश क्यों हर बार बाहर आ जाती हो,
एक सी तो है सारी बारिशें, आती है भिगाती हैं और चली जाती है,
तो बोली वो हां सही कहा हर बार एक सी ही बारिश आती है,
लेकिन क्या हर बार नहीं तुम्हे उतनी ही सुहाती है।

उसमें भीगना हर बार ही तुम्हें अच्छा लगता है,
वो बारिश तो एक सी ही आती है लेकिन खुशी का एहसास हर बार नया लाती है,
कभी कोई तो कभी कोई उसकी बूंदों का स्पर्श होते ही,
तुम्हें खुश होने की कोई नई वजह याद आ जाती है।

हां जानती हूं घास हमेशा हरी नहीं रहती,
कभी कभी उदासी के वक्त भी बारिश आ जाती है,
तो क्या वो उस वक्त तुम्हारी साथी सी नहीं बन जाती है,
तुम्हारे आँसुओं को पनाह देकर दोस्ती का फर्ज नहीं निभाती है।

स्वीकार कर तुम्हारी सारी भावनाओं को मां के भांति अपनी छांव में आश्रय नहीं देती है,
तो बताओ, बताओ जो बारिश इतने सारे किरदार निभाए वो कैसे हर बार एक सी लगे,
एक सी होकर भी हर बार नया एहसास साथ लाती है।

इसीलिए इसके बारे में लिखते मेरी कलम नहीं थकती है,
जब जब बरसे बादल तब तब कुछ लिखने की मन में जिद आती है,
सुनकर मेरी उस अंतर ध्वनि को मुझे सारी बात समझ में आई,
वो खुद नहीं आती बाहर मैं ही उसे हर बार बुला लाती हूं।

सच तो यह है देखकर बारिश को मैं हर बार ही मंत्रमुग्ध हो जाती हूं,
हर बार ही मंत्रमुग्ध हो जाती हूं।।



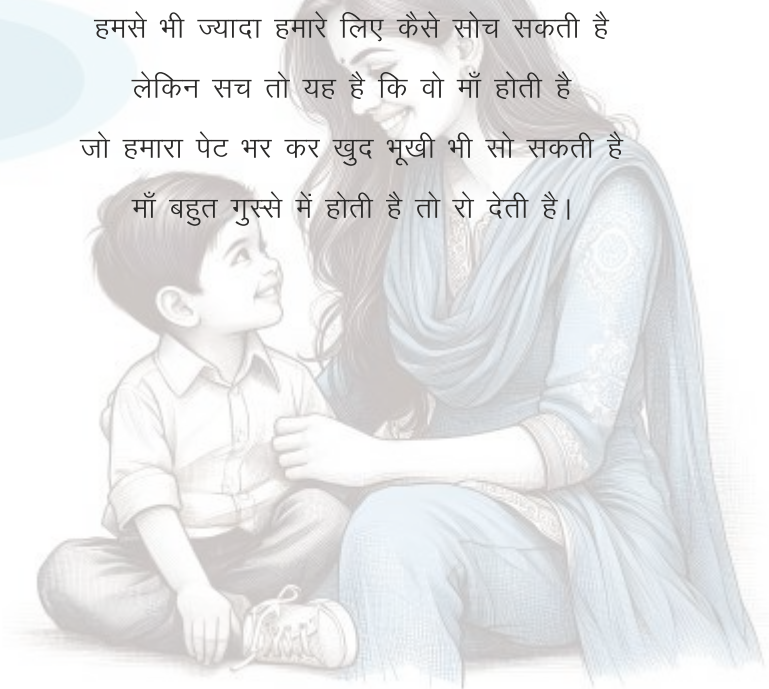
पवना देवी
लेखापरीक्षक

वक्त

वक्त की एक करवट में
कुछ सपने थे जो टूट गये
वो अपने कैसे अपने थे
जो सफर में पीछे छूट गये
जो बने नहीं साथी सांसों के
अब उनसे कैसी शिकायत हो
वो अपने फिर अपने कैसे
जिनमें भी वही सियासत हो
ऋतुओं में अचानक यह
क्या शरारत हो रही है ।
नींदें आँखों में कही
अचानक खो रही हैं
रिश्तों में भी फकत
शिकायत हो रही है
इच्छाएँ भी यहां बस
पाप बोझ ढो रही हैं ।
वक्त की एक करवट में
कुछ सपने थे जो टूट गये।

माँ

माँ बहुत गुस्से में होती है तो रो देती है
किस तरह वो मेरे गुनाहों को धो देती है
जब मैं अकेली रही तो उसकी याद आई
अँधेरे में भी तो उसकी याद आई
जब भूख लगी तो उसकी याद आई
सोचने में कितनी आसान लगती है जिन्दगी
जब खुद से जीना सीखा तो उसकी याद आई
तब भी लगा की माँ इतनी मतलबी कैसे हो सकती है
हमसे भी ज्यादा हमारे लिए कैसे सोच सकती है
लेकिन सच तो यह है कि वो माँ होती है
जो हमारा पेट भर कर खुद भूखी भी सो सकती है
माँ बहुत गुस्से में होती है तो रो देती है।




कहानी



पिता

प्रियंका
कनिष्ठ अनुवादक

प्राची आज बहुत खुश थी क्योंकि अगले दिन उसकी प्रतियोगी परीक्षा थी। उसने इस परीक्षा के लिए बहुत मेहनत की थी और उसे पूरा विश्वास था कि वह इस प्रतियोगी परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त कर नौकरी प्राप्त कर लेगी लेकिन उसे नहीं पता था कि अगले दिन क्या होने वाला है। वह अपनी नौकरी के सपने लिए बिस्तर पर ही अपने आने वाले कल को जी रही थी, तभी उसे अचानक से चिल्लाने की आवाज आती है। जब वह आंखे खोल कर देखती है तो उसे उसकी सौतेली मां रोते और चिल्लाते हुए नजर आती है। प्राची जब 4 वर्ष की थी तभी उसकी मां का देहांत हो गया था। फिर घर वालों और सगे संबंधियों के समझाने पर उसके पिता ने दूसरी शादी कर ली। पहले तो प्राची की सौतेली मां ने दूसरों की नजरों में अच्छी मां बनने का दिखावा किया लेकिन जल्द ही ये दिखावा खत्म हो गया। बेचारी प्राची नन्ही सी गुड़िया जिसे गुड़ियों से खेलना पसंद था उसका बचपन उससे छीन कर सौतेली मां ने घर के सारे काम धीरे–धीरे उससे करवाने शुरू कर दिए। जिसे उसकी मां ने रानी की तरह रखा था उसकी सौतेली मां ने उसे घर की नौकरानी बना दिया। जहां एक ओर प्राची के सौतेले भाई बहनों को उसकी माँ खूब लाड़ प्यार करती, वहीं प्राची के लिए अब केवल उसके पिताजी ही थे जो उसे लाड़ प्यार करते थे या उसकी देखभाल करते थे और उसकी पसंद का ख्याल रखते थे। लेकिन वो भी कभी–कभी पत्नी के डर के कारण ज्यादा गुस्सा या लड़ाई करने की बजाय बात शांति और प्यार से खत्म करने की कोशिश करते थे। इसका फायदा उठाकर प्राची की सौतेली मां उससे और ज्यादा बुरा व्यवहार करने लगी। प्राची बेचारी उसे इन सब बातों की समझ कहां थी वह तो पापा के थोड़े लाड़ प्यार से ही बाकी सारी बातें भूल जाती थी। उसने पूरे घर में मां की केवल चिल्लाने की आवाज सुनी थी जिसमें केवल अपने लिए उसे बस गुस्सा और नफरत दिखाई देती थी। लेकिन ये आवाज कुछ अलग थी इसमें एक डर था। वो चिल्लाते और रोते हुए प्राची को उसके पिताजी के बारें में बताती है कि उनकी तबीयत अचानक बहुत खराब हो गई है। प्राची बिना कोई देरी किए जल्दी से उठकर माँ के साथ पिताजी के कमरे में जाती है जहां उसके पिताजी बेहोश थे। सभी घर वाले मिलकर उन्हे अस्पताल ले गए लेकिन अस्पताल ले जाते समय उनकी मृत्यु हो गई। जैसे ही ये खबर प्राची ने सुनी वो जैसे बेजान सी हो गई मां के जाने के बाद पिताजी ही एक मात्र उसकी दुनिया थे, उनमें उसकी सारी दुनिया थी। पिताजी ने उसे हमेशा हौसला दिया और आगे बढ़ने की प्रेरणा दी थी लेकिन क्या आज जब उसकी परीक्षा थी उसकी प्रेरणा और हौसला दोनों ही टूट चुके थे। पिताजी ने बचपन से लेकर आज तक

उसके लिए जो कुछ हो सकता सब किया। ये सब बातें और उसकी बचपन की यादें प्राची के मन मस्तिष्क में बार–बार आ रही थी। उसे एक–एक पल जैसे बहुत कठिन और लंबा लग रहा था। उसका जीवन जैसे उसे वीरान सा लगने लगा। धीरे–धीरे समय बीतता गया उसकी मां का व्यवहार और बुरा हो गया। प्राची को इससे भी अब कोई फर्क नही पड़ता था वो बस एक कान से सुनती और दूसरे से निकाल देती और कोई प्रतिक्रिया नहीं देती थी। पढ़ाई में भी उसकी अब कोई रुचि नहीं थी। उसकी सारी उम्मीदें और सपने मानों जैसे टूट ही गए थे जो उसने और उसके पिताजी ने मिलकर देखे थे। जब उसे पिताजी की बातें याद आती वो चुपचाप अपने कमरे में जाकर सिसक–सिसक कर रोने लगती थी फिर बाहर से आवाज आती कहां मर गई प्राची खाना कब बनाएगी? जब तक डांट ना खाए कुछ काम ठीक से नहीं करती है, इतनी रात हो गई है कहां मर रही है? प्राची को इन सब की आदत हो चुकी थी। वो ये सब सुनकर चुपचाप रसोईघर में जाकर खाना पकाने लगी। बेचारी करती भी क्या उसके पास अब उसका साथ देने के लिए उसके पिताजी नहीं थे जो उसके सपनों की कद्र करते थे। उन्हें प्राची पर पूरा भरोसा था कि वो जीवन में जरूर सफल होगी और होता भी क्यों न घर के सारे काम का बोझ होने के बावजूद बिना किसी कोचिंग के वह अपनी कक्षा में अव्वल आती थी। वह अपने जीवन में कुछ हासिल करना चाहती थी। आज वो प्राची कहीं खो सी गई थी जो प्राची अपनी सौतेली मां के अपशब्द सुनकर भी उमंग से भरी हुई थी वह केवल अपने पिताजी के प्यार भरे शब्दों के कारण। एक दिन बाजार में प्राची की मुलाकात अपनी एक मित्र रितु से हुई जो उसे ऐसे निराश देख कर बहुत दुखी हुई। उसे वह प्राची बहुत असहाय लगी। विद्यालय में प्राची केवल पढ़ाई में ही होनहार नहीं थी वह अपने मित्रों से भी बहुत प्यार करती थी। वह उनके समूह में सबकी प्रिय थी। वह अपने मित्रों की उनके पाठ याद करने वह उन्हें गणित या अन्य विषय समझाने में मदद किया करती थी। रितु भी उन मित्रों में से एक थी। प्राची ने रितु को अपने पिताजी के बारे में बताया। रितु को प्राची के घर की परिस्थिति के बारे में जानकारी थी लेकिन प्राची के पिताजी के बारे में सुनकर रितु को बहुत ही बुरा लगा। उसने प्राची को सांत्वना दी और समझाया कि उसे अपने और अपने पिताजी के सपनों को पूरा करना चाहिए। जो हो गया उसे बदला नहीं जा सकता है लेकिन अब उसे अपने आने वाले भविष्य पर ध्यान देना चाहिए जिससे वह अपने हालातों को बदल सके। प्राची को ये सारे शब्द जैसे अपने से लगे उसे अपने पिताजी की याद आ गई मानों जैसे किसी ने उसके मुर्दा शरीर में इन सब शब्दों से फिर से जान फूंक दी हो। धीरे–धीरे उसने फिर से मेहनत करनी शुरू की और मन लगा कर पढ़ाई की। बीच–बीच में रितु भी उससे मिलने जाती रहती थी ताकि जैसे भी संभव हो वो भी उसकी मदद कर सके रितु को भी उस पर दया आती वो भी पुरानी हँसती हुई प्राची को फिर से देखना चाहती थी जो घर में इतनी घृणा और तिरस्कार को सह कर भी विद्यालय में सबको आदर सत्कार और प्रेम देती थी। उसे हमेशा से प्राची में एक उमंग दिखाई देती थी और उसे भी प्राची के पिताजी की तरह प्राची पर पूरा भरोसा था कि वह अपने जीवन में जरूर सफल होगी। यहां रितु के उन शब्दों ने प्राची की बुझी हुई अग्नि को फिर से जला दिया था। इस बार उसने पहले से भी अधिक मेहनत और लगन से तैयारी की और प्रतियोगी परीक्षा दी और उसकी मेहनत और लगन के कारण इस बार प्रतियोगी परीक्षा में उसने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

जैसे ही परिणाम आया सभी लोग उसकी प्रशंसा करने लगे। आस पास से खबर पहुंच गई और लोग उसके घर बधाई देने आने लगे। उन सभी के सामने प्राची की माँ फिर से अच्छी माँ बनने का दिखावा करने लगी और उससे लाड़ प्यार तथा उसकी प्रशंसा करने लगी, अब तो जैसे प्राची से अच्छी और प्रिय संतान उसके लिए कोई ना थी। जब ये खबर मीडिया में फैली प्रेस रिपोर्टर उसका साक्षात्कार लेने उसके घर आने लगे। जब रिपोर्टर उससे सवाल करने लगे उसकी आंखों में केवल आंसू थे और उन आंसुओं से वो अपने पिताजी को हमेशा आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हुए पीठ को थपथपाना याद कर रही थी। वह याद कर रही थी उसके पिताजी के सपने और उनकी दी हुई प्रेरणा को जिससे उसके हौसले मजबूत हुए। वह उसके पिताजी की खुशी को महसूस कर रही थी क्योंकि उसने दोनों के देखे हुए सपने को साकार कर दिया था ।



कार्यालयीन समाचार
कार्यालय में आयोजित की गई गतिविधियाँ

मनोरंजन प्रतियोगिता

कार्यालय परिसर में दिनांक 12.04.2023 को सभी अधिकारियों/कर्मचारियों की उपस्थिति में एक मनोरंजन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

कार्यालय परिसर में दिनांक 21.06.2023 को सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य पर योग के लाभ बताये गए व योगाभ्यास करवाया गया।

कूड़ेदान का पृथक्करण

दिनांक 19.06.2023 को प्रधान महालेखाकार (ले.प.) पंजाब, चंडीगढ़ द्वारा कार्यालय में कूड़ेदान कचरा पृथक्करण हेतु रीसाइकलेबल कूड़ेदानों की व्यवस्था करवाई गयी।

रक्तदान शिविर

कार्यालय परिसर में दिनांक 22.06.2023 को सभी अधिकारियों/कर्मचारियों की उपस्थिति में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया।

ई–वेस्ट निस्तारण

कार्यालय परिसर में दिनांक 05.07.2023 को ई–वेस्ट निस्तारण शिविर का आयोजन किया गया।

वृक्षारोपण

कार्यालय परिसर में दिनांक 25.07.2023 को कार्यालय के उद्यान में सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को एकत्रित कर चंडीगढ़ वन विभाग की देखरेख में वृक्षारोपण करवाया गया।

निःशुल्क नेत्र जांच शिविर

कार्यालय परिसर में दिनांक 02.08.2023 को **मिर्चिया और डॉ. अग्रवाल** के द्वारा निःशुल्क नेत्र जांच शिविर सफलतापूर्वक संपन्न करवाया गया।

अंगदान महोत्सव

कार्यालय परिसर में दिनांक 03.08.2023 को अंगदान महोत्सव के उपलक्ष्य में भाषण संवाद हुआ व सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने मिलकर प्रतिज्ञा ली।

तनाव प्रबंधन पर व्याखान

कार्यालय परिसर में दिनांक 10.08.2023 को श्रीमती गरिमा सिंह, (भारतीय राजस्व सेवा) द्वारा 'तनाव प्रबंधन' पर सभी अधिकारियों/कर्मचारियों की उपस्थिति में व्याख्यान दिया गया।

स्वतंत्रता दिवस

कार्यालय परिसर में दिनांक 15.08.2023 को सभी अधिकारियों/कर्मचारियों की उपस्थिति में स्वतंत्रता

दिवस कार्यक्रम का आयोजन करवाया गया जिसमें प्रधान महालेखाकार महोदया के द्वारा ध्वजारोहण किया गया।

एन.पी.एस. सेमीनार

कार्यालय परिसर में दिनांक 05.10.2023 को एच.डी.एफ.सी. बैंक कर्मियों द्वारा सेमीनार का आयोजन करवाया गया जिसमें सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को एन.पी.एस. से सम्बंधित जानकारी दी गयी।

वाकेथन 2023

ऑडिट दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 25.11.2023 को वाकेथन का आयोजन किया गया।

पाठ और हवन

कार्यालय परिसर में दिनांक 01.01.2024(सोमवार) को नववर्ष के उपलक्ष्य में दोपहर 11 बजे पाठ व हवन किया गया तत्पश्चात लंगर का आयोजन करवाया गया।

लोहड़ी

कार्यालय परिसर में दिनांक 12.01.2024 को लोहड़ी के कार्यक्रम का आयोजन करवाया गया जिसमें कार्यालय के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने हर्षोल्लास के साथ भाग लिया।

गणतंत्र दिवस

कार्यालय परिसर में दिनांक 26.01.2024 को सभी अधिकारियों/कर्मचारियों की उपस्थिति में गणतंत्र दिवस मनाया गया।

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस

दिनांक 18.03.2024 को शाम 4:00 बजे अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

"हिन्दी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है"

– स्वामी दयानन्द सरस्वती

सेवानिवृत्ति

समय अपनी गति से चलता रहता है। कार्यालय में जिन्हें हम अपना प्रेरणा स्त्रोत मानते हैं, जिनके सक्षम कार्यकलापों से हम बहुत कुछ सीखते हैं, जिन्हें प्रतिदिन देखते हैं, अचानक पता चलता है कि वे सेवानिवृत्त हो रहे हैं। उनका दीर्घ अनुभव व मार्ग दर्शन अब हमें प्राप्त नहीं होगा। तब उनके सुखी व स्वस्थ जीवन की कामना करते हुए स्नेह व सम्मान के पुष्प अर्पित करके ही संतोष करना पड़ता है। ''सुगंधा'' परिवार इन महानुभावों की कार्यालय के प्रति की गई सेवा के लिए कृतज्ञता ज्ञापित करता है एवं उनके सुखी व समृद्ध जीवन की कामना करता है।

क्रमांक	नाम (श्री/सुश्री)	पदनाम	सेवानिवृत्ति की तिथि
1	अरविंदर राणा	व.ले.प.	09.04.2023(ऐच्छिक)
2	बलबीर सिंह पराशर	स.ले.प.अ. (पीडीए)	30.04.2023
3	दविंदर सिंह तूर	व.ले.प.अ.	30.04.2023
4	नरिंदर कुमार खट्टर	व.ले.प.अ.	31.05.2023
5	राजिंदर कुमार	स.ले.प.अ.	31.05.2023
6	सुरेंद्र पाल	स.ले.प.अ.	30.06.2023
7	जगदीश कुमार	व.ले.प.अ.	30.06.2023
8	स्वरूप सिंह	सहायक पर्यवेक्षक	30.06.2023
9	कृष्ण कुमार	स.ले.प.अ.	31.07.2023
10	अजीत सिंह	पर्यवेक्षक	31.07.2023
11	निशा दत्त	व.ले.प.अ.	31.07.2023
12	भीम सिंह	सहायक पर्यवेक्षक	31.07.2023
13	बलजीत सिंह	सहायक पर्यवेक्षक	30.09.2023
14	राजिंदर नाथ	स.ले.प.अ.	30.09.2023
15	सरोज पाल	स.ले.प.अ.	30.09.2023
16	प्रीतम कौर	व.ले.प.	30.09.2023
17	टेक चंद	सहायक पर्यवेक्षक	22.09.2023(ऐच्छिक)
18	रणजीत कौर	पर्यवेक्षक	31.10.2023
19	मनोहर सिंह	व.ले.प.	31.10.2023
20	सत पाल	स.ले.प.अ.	31.12.2023
21	दिनेश कुमार	स.ले.प.अ.	31.12.2023
22	राजिंदर सिंह	पर्यवेक्षक	31.12.2023
23	हरजिंदर सिंह	सहायक पर्यवेक्षक	31.12.2023
24	परमजीत तूरा	व.ले.प.अ.	31.12.2023
25	सुखविंदर सिंह	स.ले.प.अ.	31.01.2024
26	श्याम मोहन शर्मा	व.ले.प.अ.(वा.)	31.01.2024
27	बाबू राम	एम.टी.एस.	31.03.2024
28	जसविंदर कौर	सहायक पर्यवेक्षक	31.03.2024

कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों के बच्चों की विशेष उपलब्धियाँ



सुश्री शाम्भवी, श्री आशीष कुमार (स.ले.प.अ.) की पुत्री, जो वर्तमान में बी.ए. इतिहास (ऑनर्स) कर रही हैं, अपने काम के प्रति जुनूनी हैं। वह 4 साल की उम्र से ही भाषण दे रही हैं और हर कक्षा में विभिन्न पुरस्कार जीते हैं। उनकी लेखन में भी रुचि है। हाल ही में, उनकी दो कविताएँ – 'इज इट टू मच टू आस्क फॉर,' और 'कोल्ड हेवन ऑन अर्थ' को जुलाई एंथोलॉजी श्रृंखला की पुस्तक में चुना और प्रकाशित किया गया है, जो एमजॉन पर भी उपलब्ध है।

अकादमिक रूप से, वह हमेशा एक मेहनती छात्रा रही हैं। उन्होंने अपनी कक्षा 10वीं में 95.2 प्रतिशत और कक्षा 12वीं की बोर्ड परीक्षा में 93.4 प्रतिशत अंक प्राप्त किए और अपने स्कूल की मानविकी स्ट्रीम की टॉपर बन गईं।

वह सी.बी.एस.ई. द्वारा नियुक्त लीड पियर शिक्षकों में से एक थीं, जो AKSIPS 41B, चंडीगढ़ में राष्ट्रीय स्तर पर हमारे स्कूल का प्रतिनिधित्व करने के लिए चुनी गई थीं। उन्होंने सी.बी.एस.ई. द्वारा आयोजित चार दिवसीय वेबिनार में भाग लिया, जिसमें जीवन कौशल, समग्र स्वास्थ्य और कल्याण में किशोर पियर शिक्षक नेतृत्व कार्यक्रम में भाग लिया, जिसमें भारत के विभिन्न स्कूलों के साथ एक्सप्रेशन्स इंडिया टीम के सहयोग से आयोजित किया गया था।

शाम्भवी एक सिविल सर्वेंट बनने की आकांक्षा रखती हैं और राष्ट्र के प्रति समर्पित होना चाहती हैं। वह अपने माता–पिता और भारत को गर्व से भरना चाहती हैं।

श्रद्धांजलि

जन्म एवं मृत्यु सब विधि का विधान है। हमें बहुत दुख होता है जब विधि द्वारा बनाए विधान के अनुसार हमारे बीच से कोई अपना प्रिय काल का ग्रास बन जाता है।

हमारे कार्यालय के निम्नांकित साथी के असामयिक निधन की पीड़ा हमें गत वर्ष सहनी पड़ी। 'सुगंधा' परिवार दिवंगत साथियों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परम पिता परमेश्वर से यह प्रार्थना करता है कि प्रभु उनकी आत्मा को चिर–शांति प्रदान करें तथा उनके परिवारजनों को विपदा की इस घड़ी में शक्ति प्रदान करें।

क्र. सं.	नाम (श्री/सुश्री)	पदनाम	देहावसान की तिथि
1.	आशीष कुमार	स.ले.प.अ.(वा.)	26.05.2023
2	सुनीता कुमारी	ले.प.	08.10.2023

ध्वजारोहण



स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर प्रधान महालेखाकार महोदया ध्वजारोहण करते हुए ।



सुखना झील, चण्डीगढ़

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

राजभाषा कार्यान्वयन समिति

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

पंजाब, चण्डीगढ़ – 160017